



अलीपदोंवाँके दरबारमें हाज़िर रहने लगा । एक दिन अर्जुन की फि, जहाँपनाह ! राजा रामकान्तने पचास लाख रुपया धरम जमा किया और दो लाखका सरपेच मोल लिया है । पर आपका रुपया भदा नहीं परता, चाकी डालता चला जाता है और सरकारी मालगुजारीको घातोंमें उड़ाना चाहता है । नवायने पूछा कि, नू पचास लाख रुपयेका उसके घरमें निशान दे सकेगा । उसने कहा, बेशक । नवायने फिर पूछा कि राजा रामजीवनके पुटुम्यमें और कोई भी राजके लायक है ? उसने कहा, उनका भतीजा देवप्रसाद बड़ा ईमानदार जमान्तदारीके काममें होशियार है । नवायने उसीदम हुकुम दिया कि, फौज जाये और रामकान्तका घर-बार लूट लेवे और देवप्रसाद उसकी जगह राजा होवे । मुसलमानोंकी जमान्तदारीमें प्रायः ऐसीही धन्धेर मचा करता था । रामकान्त महलोंमें था । सुना कि नवायकी फौज घरमें घुस आयी और लूटकर रही है । रज्जुकी सीपने रानी भयानोको साथ ले पनालेकी राह बाहर निकला । धन द्रव्यका जरा भी मोह न किया । रानी भयानो एक तो रानी, दूसरे गर्भवती । पायों फाटेको फभी चली थी । ज्यों त्यों पैरकी उठनी राम-कान्तके साथ गंगाके किनारे तक पहुँची । यहाँसे एक छोटीसी नावपर पैठकर दोनों मुर्शिदाबाद आये और जगत सेठकी शरण लेकर एक छोटीसी हफ्तेमें रहने लगे । बिपनकी तकलीफ़ सहे-सहते, पददा गये थे । एक दिन



यक्षी और देवीप्रसादको दरबारसे निकलवा दिया। तबसे राजा रामकान्त दयारामको बहुत मानता रहा और सोलह वरस राज्य करके परलोकको सिधारा। रानी भवानीके लड़का कोई न था—दो हुए थे, सो दोनों बालकपनमें ही मर गये थे। सारा काम ज़मींदारीका आप देखती थी और दान और धर्ममें बड़े राजाओंको मात करती थी। एक लाख अस्सी हजार रुपया साल तो नक़्द पण्डित और फ़कीरोंको मुफ़रर था और प्रायः पाँच लाख बिघेके लोगोंको धरती माफ़ कर दी थी। घाट, धर्मशाला आदिके सिवाय तीन सौ हथेली बनारसमें मोल ली थी कि जो लोग वहाँ काशीवास करनेको आवें, बिना किराये उनमें रहा करें। बहुतरे आदमी उसके देशके जो काशीमें रहनेको आते मकानके सिवाय जन्म भर परिवार समेत खाने पहननेको भी देती। पञ्चकोशीकी सारी सड़कमें थोड़ी-थोड़ी दूरपर धर्मके ढाँहे बनवाकर और कुएँ खोदवाकर पेड़ लगवा दिये थे। कई जगह धर्मशाला बनवाके तालाब भी तैयार कर दिये थे। सदावर्त जारी था। काशीमें आठ मन भीगा चना और पचीस मन चावल नित्र भूयोंको बाँटा जाता था और एक सौ आठ स्त्री-पुरुष इच्छा-भोजन करते थे। जब रानी भवानी काशीमें आयी तो कहते हैं सत्रह सौ नाव उसके साथ थीं। उसका रहना अक्सर ज़िले मुर्शिदाबादमें गंगाके तीर बड़नगरमें होता था और यह सोचकर कि सब जगहमें सब समयमें भूखे नंगे उस तक

नहीं पहुँच सकते और न वह उनको दान दे सकती थी—  
 हुक्म था कि जब लोहे भूखे-नांगे आये तो दो रुपये तक  
 पोद्दार, पाँच रुपये तक स्वजानची, दस रुपये तक मुसद्दी  
 और सौ रुपये तक दीवान बिना पूछे दे दे। जब सौ रुपये  
 से अधिक देना होना गनीमें पूछे। ज़मींदारी भग्ने ब्राह्मणकी  
 कन्याका विवाह-स्वर्ग गनीकी सरफारसे दिया जाता था।  
 नवरात्रमें दो हजार यम्य सधया और कुमारियोंको घंटना  
 और उसके साथ सोनेकी एक-एक नथ भी दी जाती और  
 पचास हजार रुपया पण्डितोंको मिलता। रोगियोंको देखनेको  
 आठ घैघ नीकर थे—ये ज़मींदारी भग्ने गाँव-गाँव दवा लेकर  
 घूमा करते। बीमारोंकी सेवाको उनके साथ नौकर भी  
 रहा करते। गनी भयानीकी दान-धर्ममें इसी धानमें मालूम होजायगा। जयंतक एक  
 आमदनी आनेमें देर हुई तो आपने हुक्म  
 जो कुछ गद्दा है वेंच डालो और  
 देनेको कहा है तुरन्त दे दो, कहने है कि  
 रुपयेको बिका और  
 तो भी पूरा न पड़ा, तब अपने गद्दे  
 ज़िमे जो देनेको कहा था वह बनन  
 चार घड़ी रात रहने डरती थी और  
 करती और धर्मशास्त्रका ध्यान करती।  
 "करके अपने हाथमें रमौई बनाते"

खिलाके तब थाप भोजन करती । फिर दिवानखानेमें कुशासनपर बैठकर पान सोपारी खाती और जो कुछ कारदारोंको आजा देनी होती सो उन्हें लिखवा देती, तीसरे पहरको धर्मशाम्भ सुनती । दो घड़ी दिन रहे कारदार लोग कागज़ दस्तखत करानेको लाते । रातको फिर चार घड़ी जप करती तब कुछ भोजन करके डेढ़ पहर रात तक राज-काजकी सुध लेती और दरबार करती । यत्तीस वर्षकी अवस्थामें चिघड़ा हुई थी और उन्नासी वर्षकी अवस्थामें परलोकको तिधारी पर नियम उत्तका करी नहीं दृष्टा ।

### प्रश्न

- ( १ ) गनी भदानीका जीवनचरित्र संक्षेपमें लिखो ।
- ( २ ) इफागम हीन था ? उनसे क्यों राजा रामकान्तका राज जितवा लिया और कि जितवा दिया ?
- ( ३ ) गनी भदानीको दिनचर्या लिखो । उसकी दिनचर्यामें क्या बात मुख्य थी ?

---



( ११ )

ध्वनि तब करती वे क्या न निस्सार-सी तू।  
जब पिक घतलाती शब्दकी चानुरी तू॥

( ४ )

सरस उपवनोमें वाटिकामें कभी तू।  
गिरि-सरित तटोंके प्रान्तमें सर्वदा ही॥  
सुरभित हरियाली हो जहाँ दीखती तू।  
सुमधुर मतवाली कूकको कूजती तू॥

( ५ )

प्रिय-विरह दशामें क्या कहाँ जा छिपाती ?  
सुललित वह बानी भी नहीं तू सुनाती॥  
सच कह, वह बातें क्या नहीं याद आती ?  
“परभृत” वह तेरा नाम भी भूल जाती॥

( ६ )

कविजन गुण तेरे नित्य गाते तथापि,  
अति परिचय से तू हो न फीकी कदापि॥  
यस अधिक कहें क्या ? मान काफी यही तू।  
अनुपम गुणवाली भाग्यशाली बड़ी तू॥

प्रश्न

( १ ) नीचे लिखे वाक्योंको शुद्ध करो :—  
“तब पिक करती तू शब्द प्रारम्भ तेरा ।”

( २ ) कोयल किस ऋतुमें प्रायः किस समय बोलती है ?

( ३ ) कोयलको ‘परभृत’ क्यों कहते हैं ?

( ४ ) पहले और पाँचवें छन्दका अर्थ करो ।





अमुक मनुष्य कैसा है, यह यात इससे नहीं जानी जा सकती कि वह क्या कहता या कौन-सा काम करता है। इस यातको जाननेके लिए यह देखना चाहिए कि वह मनुष्य किसी कामको किस रीतिसे करता या कहता है। उसकी करने या कहने की रीतिसे उसके चरित्रका, उसके शीलका, पूर्णतया पता लगा सकता है। कोई मनुष्य जब कुछ कहता या करता है, तब उसके बोलने, ताकने, हिलने, डोलने तथा अन्य चेष्टाओंसे उसका आन्तरिक और स्वाभाविक भाव आपही आप प्रकट हो जाता है। कोई मनुष्य धनकी सहायतामात्रसे उतना प्रसन्न न होगा जितना उस सज्जनतासे होगा जो उसके साथ धन देते समय दिखलाई जायगी। यदि किसीको कठोर वचनके साथ कुछ द्रव्य दिया जाय तो वह कभी प्रसन्न नहीं होगा। इससे स्पष्ट है कि द्रव्य उसकी प्रसन्नता तथा कृतज्ञताका उतना बड़ा कारण नहीं है जितना द्रव्य देनेका ढंग है। यहाँ तक देखा गया है कि यदि हम किसी मनुष्यकी इच्छाको पूर्ण न भी करें, पर उसे नम्रता पूर्वक टाल दें तो वह बुरा नहीं मानता।

शीलवान् मनुष्यमें यह विशेष गुण होता है कि वह स्वयं प्रफुल्लित रहकर अपने साथियोंको भी प्रफुल्लित बनाये रखता है। नम्रता और सहिष्णुता शीलके प्रधान अंग हैं। सत्त्वा शीलवान् और सत्पुरुष वही है जो दूसरोंकी छोटी-छोटी बातों और नाममात्रके अपराधोंको उदारता पूर्वक क्षमा कर



अमुक मनुष्य कैसा है, यह बात इससे नहीं जानी जा सकती कि वह क्या कहता या कौन-सा काम करता है। इस बातको जाननेके लिए यह देखना चाहिए कि वह मनुष्य कितनी कामकी किस रीतिले करता या रहता है। उत्तरी करने या कहने की रीतिले उसके चरित्रका, उसके शीलका, पूर्णतया पता लग सकता है। कोई मनुष्य जब कुछ कहता या करता है, तब उसके घोलने, ताकने, हिलने, डोलने तथा अन्य चेष्टाओंसे उसका आन्तरिक और स्वाभाविक भाव आपही आप प्रकट हो जाता है। कोई मनुष्य धनकी सहायतानाशसे उतना प्रसन्न न होगा जितना उस सज्जनतासे होगा जो उसके साथ धन देते समय दिखलाई जायगी। यदि किसीको कठोर बचनके साथ कुछ द्रव्य दिया जाए तो वह कभी प्रसन्न नहीं होगा। इससे स्पष्ट है कि द्रव्य उसकी प्रसन्नता तथा कृतकृत्यताका उतना बड़ा कारण नहीं है जितना द्रव्य देनेका ढंग है। यहाँ तक देखा गया है कि यदि हम किसी मनुष्यकी इच्छाको पूर्ण न भी करें, पर उसे नम्रता पूर्वक टाल दें तो वह दुरा नहीं मानता।

शीलवान् मनुष्यमें यह विशेष गुण होता है कि वह स्वयं प्रकुल्लित रहकर अपने साथियोंको भी प्रकुल्लित बनाये रखता है। नम्रता और सहिष्णुता शीलके प्रधान अंग हैं। सत्त्वा शीलवान् और सत्पुरुष वही है जो दूसरोंकी छोटी-छोटी बातों और नानाशके अपराधोंको उदारता पूर्वक क्षमा कर



जो मनुष्यके शीलको अच्छा नहीं प्रकट करतीं। जो मनुष्य अपना हित चाहता है, उसे इनसे सदैव बचते रहनेका प्रयत्न करना चाहिए।

उत्तम शील किसी व्यक्ति विशेषके लिए ही आवश्यक नहीं है। बल्कि यह एक ऐसा अमूल्य गुण है जिसके बिना मनुष्य किसी भी व्यवसायमें या किसी भी प्रकारकी जीवन-यात्रामें सुर्या और सफल मनोरथ नहीं हो सकता। संसारमें ऐसे बहुतसे कुरूप, धनहीन और विद्यार्हीन मनुष्य होगये हैं जो केवल शीलवान् और सदाचारी होनेके कारण इतिहासके पृष्ठोंको अलंकृत करके अपना नाम अजर-अमर कर गये हैं। माननीय मिस्टर गोखलेके विषयमें कहा जा सकता है कि वे लोगोंको अपनी उत्तम चकृत्य-शक्ति और विद्वत्तासे जितना प्रसन्न करते थे उससे कहीं अधिक वे उन लोगोंको अपने शीलसे प्रसन्न किया करते थे और अपने विषयकी ओर मुका लेते थे। जस्टिस रानाडेमें इतनी शक्ति थी कि वे कट्टरसे कट्टर अपराधीसे भी उसका अपराध स्वीकार कर-लिया करते थे। डी० एन० साता ऐसे कार्य-कुशल हो गये हैं कि उनको देखते ही उनकी कम्पनीके नौकरोंमें कार्य करनेकी स्फूर्ति आजाया करती थी। सर जनसेंजी यद्यपि पहले निर्धन व्यवसायी थे तथापि वे अपने मधुर भाषण और अनुकरणीय शीलके कारण अपार सम्पत्तिके स्वामी होगये हैं। ऐसे और भी उदाहरण दिये जा सकते हैं। इन समस्त



उसके सांसारिक और पारलौकिक कल्याणका मुख्य साधन है। सच्चे शीलकी सहायतासे ही मनुष्यको धर्म, यश, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, ज्ञान, वैराग्य आदि सब गुणोंकी प्राप्ति होती है।

सारांश यही है कि जीवन-संग्राममें तरुल-मनोरथ होनेके लिए शील ऐसा उपाय है जो प्रत्येक मनुष्यके स्वार्थीन है। यथार्थमें शीलवान् होना अपने ही ऊपर अवलम्बित है। शीलवान् मनुष्यको अपने बाह्य आवरण तथा आन्तरिक मनो-भावोंपर भी ध्यान देना चाहिए। जिस प्रकार प्रसन्नता, नम्रता, सहिष्णुता, उदारता, आदि उच्च भाव आवश्यक हैं उसी प्रकार किस्तीकी अनुचित हंसी न करना, ऐसी छोटी-छोटी बातें भी आवश्यक हैं। शील ही मनुष्यका सच्चा जीवन-वरिष्ठ है। इसका अभ्यास छात्रावस्थासे ही होना चाहिए। बड़ी आयुमें शीलका दृढ़ता कष्ट साध्य और कभी-कभी तो असम्भव भी हो जाता है।

### प्रश्न

- ( १ ) शीलवान् मनुष्यमें क्या विशेषता होती है ?
- ( २ ) उक्त शील मनुष्यका किस प्रकार सहायक होता है ?
- ( ३ ) मनुष्यके शीलमें कौन-कौन बातें बाधा डालती हैं ?
- ( ४ ) कुछ ऐसे शीलवान् पुरुषोंका इतना बड़ा जो अपने शीलके कारण प्रतिद्वन्द्वी हुए हैं।
- ( ५ ) उदात्त, उच्चकुल, मनोरथ, मातांग, सुदृढाचार्य, सद्गुणों सन्धिके दुर्कड़े करें।





( ३ )

ऋषि, मुनि, वीर, धूर्ता, द्रष्टव्यारो,  
 साधु, सती, सम्राट्, सुखारो,  
 दिव्यी, मुक्तवि, गुणी, नर, नारी,  
 सदाका जन्म म्यान ।  
 हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥

( ४ )

राम कृष्णने धीर दनाकर,  
 शेर शिवाजीने अपनाकर,  
 प्रिय प्रतापने प्राण गंवाकर,  
 जीयन बिद्या प्रदान ।  
 हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥

( ५ )

यह समुद्रतिरी ध्रुव पारा,  
 चमके सिर सौभाग्य-सितारा,  
 धर्म-धर्म दोनोंके द्वारा,  
 हो नुर लोक समान,  
 हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥

प्रश्न

- ( १ ) हम क्यों आजाद जागदलेंगे क्यों करेंगे ।  
 ( २ ) सिराजी और प्रतापने समान हैं क्या समझे हो ?  
 ( ३ ) हमने और क्यों सदा धर्म समझते ।



पेग न गयी, और सुखा और संगीतका सुन्दर संगार पापकी  
काफी छायामें सुगन्धित रहा ।

परमात्माने अपने जीवकी यह धारणा देखी और प्रसन्न  
हुआ ।

( २ )

जिह्वा कालके पश्चात् शैतानने दुनियापर फिर आक्रमण किया ।

राजका समय था । आदर्मी शान्तिकी निद्रामें स्वर्गके  
स्वप्न देख रहा था । शैतान अपने किन्तुदीदार पंजोंको धीरे-धीरे  
जमीन पर रखता हुआ आदर्मीके पास आया और अपनी  
जादूकी मन्त्र्यामैं उसके दो टुकड़ें करके भाग गया । पण्डु  
आदर्मीको अर्द्ध-मार्मिक इस आधुनी कृपका भान न हुआ ।

प्रातःकाल जब संध्याम हुआ, तो दो हाथीयाले, दो गायी-  
याले, एक भिरियाले आने दिखयाले, दोनों आदर्मीयोंने देह  
और आत्माकी सम्पूर्ण शक्तियोंमें शैतानका मुक़ाबला किया,  
पण्डु उनमें साहस और उम्मार न था ।

शैतान जीत गया ।

उसने विजय और आनन्दका गूहफुहा लगाया, और  
उसके साथ ही शान्ति और सन्तोषमें संध्यामैं बैठा, ऊँच और  
दुःख दर्शित्वकी सफलता कीमतीयोंने प्रवेश किया ।

( ३ )

जब आदर्मी पण्डु सामने, सत्तर, मुकुटमय आदर्मी न  
था । उसने जयोंपर मुक़ाबले सफलता के ही अर्थ की;  
जीवनका प्रसन्नताय मर्त उसकी जीर्णोद्धार आनन्द हो गया था ।







## ८—कल्पना-शक्ति

( ले०—पण्डित घालकृष्ण मट्ट )

लेखक-परिचय—महोदय अन्तर्गत प्रकाशने सं० १९०१ में हुआ था। "हिन्दी-दर्शन" आपका प्रसिद्ध मासिक पत्र था। आप एक मित्रहन्ता लेखक थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आपके लेखोंको बहुत समन्दर करते थे। आपके कुछ निबन्धोंका संग्रह "माहिम्न-सूचन" के नामसे प्रकाशित है। आपकी संलीमें कुछ विरोधका है।

मनुष्यकी अनेक मानसिक शक्तियोंमें कल्पना-शक्ति भी एक अद्भुत शक्ति है। यद्यपि अम्याससे यह शतगुण अधिक हो सकती है पर इसका सूक्ष्म संकुर किसी-किसीके अन्तःकरणमें आरम्भसे ही रहता है, जिसे प्रतिभाके नामसे पुकारते हैं और जिसका कवियोंके लेखमें पूर्ण उद्गार देखा जाता है। कालिदास, धीरर्ष, शेक्सपियर, मिल्टन प्रभृति कवियोंकी कल्पना-शक्ति पर वित्त व्यक्ति और मुग्ध हो, अनेक तर्क वितर्कोंकी झूठ-भुलैयामें चकर मारता टकराता, अन्तको इसी सिद्धान्त पर आकर उद्वरता है कि यह कोई प्राक्तन संस्कारका परिणाम है या ईश्वर-प्रदत्त शक्ति ( Genius ) है। कवियोंका अपनी कल्पना शक्तिके द्वारा ब्रह्माके साथ होड़ करना कुछ अनुचित नहीं है; क्योंकि जगत्-स्रष्टा तो एक ही दार जो कुछ धन पड़ा सृष्टि निर्माण कांश्ल दिखाकर आकल्पान्त फ़रागत होगये, पर कविजन नित्य नयी-नयी रचनाके गदन्तसे न जाने कितनी सृष्टि-निर्माण-वानुशी दिखलाते रहते हैं।





शकलमें बिन्दु और रेखाकी कल्पना करते-करते हमारे सुकुमार मति इन दिनोंके छात्रोंका दिमागही चाट गये। कहाँ तक गिनावे' सम्पूर्ण भारतका भारत इसी कल्पनाके पीछे गारत हो गया, जहाँ कल्पना (Theory) के अतिरिक्त (Practical) करके दिखाने योग्य कुछ रहा ही नहीं। चूँपके अनेक वैज्ञानिकोंकी कल्पनाकी शुष्क कल्पनासे कर्तव्यता (Practice) में परिणत होते देव यहाँ बालोंको हाथ नन् नन् पछानना और कल्पना पड़ा।

प्रिय पाठक ! कल्पना दुरी बन्त है। चौकल रहो, इसके पैवने कर्मा न पड़ना नहीं तो पछताओगे। आज हमने भी इस कल्पनाकी कल्पनामें पड़ बहुत सी भारी-भारी जल्पना कर आपका धोड़ाना समप नष्ट किया, क्षमा करियेगा।

### प्रश्न

( १ ) नीचे लिखे शब्दोंके अर्थ बताओ :—

सूत्र, अन्तःकरण, प्रतिमा, उद्भव, स्थितिनिर्माणकर्तृक अवस्थान, दण्ड, विद्योक्त, जल्पना।

( २ ) कल्पने प्रयोग करो :—

शेड, निष्कर्ष, हाथ मज्जक पण्डित, दौड़ना।

( ३ ) नीचे लिखे शब्दोंके अर्थ बताओ :—

कल्पना, कल्पना, मूर्ति, मूर्ति।

( ४ ) कल्पनाके अर्थ स्थितिनिर्माणकर्तृके अर्थ बताओ।



हिन्दी हिन्दुस्तानकी भाषा बिलद बिलाल ।  
 जनन लेत सयसों कहै "माँ माँ ! दादा !" बाल ॥ ४ ॥  
 घरकी औघट घाटकी, खेत प्रेत समस्तान ।  
 हाट-याट दरबारकी भाषा ये ही जान ॥ ५ ॥  
 पितृरूप शोध सकै सहज कठिन मातृ स्तन जान ।  
 ताहि के उद्धारहित यज्ञ रची सुनहान ॥ ६ ॥  
 जाते जो कुछ बन सकै माता पद अरविन्द ।  
 भक्ति-भावसे पूजये, रह्य सदा आनन्द ॥ ७ ॥

### प्रश्न

- ( १ ) नीचे लिखे शब्दोंका अर्थ बताओ :—  
 कपिलाकमिनिमाल, अन्द, विन्द, गिरिवर, गोप, अरविन्द ।
- ( २ ) हिन्दीके उद्धारते क्या मनझते हो ?
- ( ३ ) तीसरे और छठे पदका अर्थ बताओ ।
- ( ४ ) दूसरे पदका सत्य का मनझाओ ।
- ( ५ ) छठे पदका अर्थ :—  
 विन्द, विनाल, सम्मान, स्त्रि, मातृ ।



( ७ ) वेदपाठ और शास्त्र-आलोचनाकी कभी अवहेला न करो ।

( १ ) देव-कार्य और पितृ-कार्यका कभी अनादर न करो ।  
 ( २ ) माताको देवता रूप समझो । ( ३ ) पिताको देवता रूप समझो । ( ४ ) आचार्यकी देवता स्वरूप समझो ।  
 ( ५ ) अतिथिको देवता समझो । ( ६ ) जिस कार्यमें किसी प्रकार निन्दा होनेकी सम्भावना नहीं, वही करो । ( ७ ) अन्य कार्य अर्थात् जिसमें निन्दा होनेकी सम्भावना है, उसको कभी मत करो । ( ८ ) हमलोग जो सुकार्य करें, उन्हींका तुम अनुसरण करो । ( ९ ) यदि हमलोग कभी बुरा काम करें, उसका अनुकरण तुम कभी न करो ।

हमारी अपेक्षा जो ध्रष्ट ब्राह्मण हैं, उनके साथ बैठनेकी क्षमता प्राप्त कर ही दमलो—अर्थात् जब तक उनके साथ एक आसन पर बैठने न पाओ, तब तक इसके लिए प्रयत्न न छोड़ो । सदा दान किया करो । धनपूर्वक दान करो । अध्रद्धा पूर्वक दान मत करो । धन होनेपर दान करो । लज्जामें पड़ने पर भी दान करो । भयमें भी दान करो । शानमें भी दान करो । दत्त मनुष्य मिलकर भी दान करो । यदि किसी काममें तुम्हें सन्देह हो—यह काम करना उचित है कि नहीं, यह आचरण ।त है कि नहीं, ऐसा सन्देह होनेपर वहकि रहनेवाले दत्त, गुरु, विचक्षण, सहृदय और धर्मपरायण ब्राह्मण जैसा ते हों—तुम भी उसी तरह करो । किसी प्रकार निष्या



## ११—वन-शोभा

( ले०—पण्डित श्रीधर पाटक )

( १ )

चाग हिमाचल आंचलमें एक साल विसालनको बन है ।  
 मृदु मर्मर भील भरै जल स्रोत है, पर्यंत ओट है, निर्जन है ॥  
 लिपटे है लता-द्रुम, गानमें लीन प्रवीन विहंगमको मन है ।  
 मृष्यों तहें गवगों भूत्यों फिरै, मध्याचरो सो अलिको मन है ॥

( २ )

भारतमें वन पावन वृ ही, तपस्वियोंका तप-आश्रम था ।  
 जग-तन्त्रकी खोजमें लग जहाँ ऋषियोंने अभय किया धम था ॥  
 जय प्राणत विश्वका विभ्रम और था, सात्विक जीवनका मम था  
 महिमा वनवासकी थी तब और प्रभाव पवित्र अनूपम था ॥

प्रश्न

- ( १ ) वनकी किस-किस सुन्दरताका वर्णन कविने किया है ?  
 ( २ ) पहले छन्दमें प्रयुक्त आंचल, विसालन, लताद्रुम, प्रवीन और  
 गवगों—इन शब्दोंका पद-परिचय बताओ ।  
 ( ३ ) पहले पदका अर्थ लिखो ।





साहित्य-चयन



माननीय धीनिदास शास्त्री



शास्त्रीजीका जन्म सन् १८६६ की २२ वीं सितम्बरको मद्रास-प्रान्तके 'चलंगिन' नामक गाँवमें हुआ था। उनके माता-पिता निर्धन थे। शास्त्रीजीके ही कथनानुसार निर्धनताके कारण मात-पिताको कभी कभी पेटपर पट्टी बाँधकर रह-जाना पड़ता था। किन्तु वे शिक्षाका मूल्य समझते थे। इसलिए स्वयं तो कष्ट उठाते थे; किन्तु अपने होनहार पुत्रकी शिक्षाकी कभी उपेक्षा नहीं करते थे। बचपनसे ही शास्त्रीजीकी बुद्धि बढ़ी तीव्र थी और अंगरेजी भाषाके अन्यास की ओर उनकी विशेष अभिरुचि थी। १४ सालकी अवस्थामें शास्त्रीजीने मैट्रिक पास किया। इसके बाद वे कुन्नयकोनम्बुके सरकारी कालेजमें प्रविष्ट हुए। सन् १८८५ में शास्त्रीजी एफ० ए० में और १८८७ में बी० ए० में फेली प्रतिष्ठाके साथ उत्तीर्ण हुए कि प्रान्त-भरमें वे सर्व प्रथम रहे—अंगरेजीमें वे प्रथम धेनीके विद्यार्थी माने गये और इसके उपलक्ष्यमें उनको धन तथा स्वर्ण-पदकसे पुरस्कृत किया गया।

तत्पश्चात् शास्त्रीजीने कार्य-क्षेत्रमें प्रवेश किया। शिक्षा-दानका कार्य ही आपको अधिक उपयुक्त प्रतीत हुआ। पहले आप मयासूरम्बुके म्यूनिस्तिपल हाई स्कूलमें अध्यापक हुए, फिर सलेमके म्यूनिस्तिपल कालेजमें शिक्षक, इसके बाद मद्रासके पंचपाया हाई स्कूलमें मास्टर और अन्तमें ट्रिप्लिकेनके हिन्दू हाई स्कूलके हेड मास्टर हुए। इसी अवसर पर शास्त्रीजीको भारतके महान् धन्दा, नेता और राजनीतिज्ञ मन्मोहन



आपकी यह गवाही बड़े मार्केकी समझी गयी थी और विपक्षियोंने भी इसकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की थी। सन् १६२० में शास्त्रीजी कींसिल आफ स्टेटके सदस्य चुने गये।

सन् १६२१ में वह चिरस्मरणीय अवसर आया, जब शास्त्रीजी इंग्लैण्ड जाकर साम्राज्य-परिषद्में सम्मिलित होनेके लिए भारतवर्षकी ओरसे प्रतिनिधि चुने गये। वहाँ दक्षिण अफ्रीकाके तत्कालीन प्रधान-मन्त्री जेनरल स्मट्ससे पहले पहल आपकी भेंट हुई थी। इस परिषद्में पधारे हुए साम्राज्यके भिन्न-भिन्न भागोंके प्रतिनिधि शास्त्रीजीकी बहुलता, विद्वत्ता और नानिब्रता देखकर दंग हो गये थे। सम्राट्ने शास्त्रीजीको प्रीवी कींसिलका सदस्य चुनकर सम्मानित किया और इसी अवसर पर "लन्दन नगरकी स्वाधीनता" (The Freedom of the city of London) की उपाधिले आपको विभूषित किया गया था। इसके बाद ही आप राष्ट्रसंघके द्वितीय अधिवेशनमें भारतके प्रतिनिधि होकर जेनेवा पहुंचे। राष्ट्रसंघकी बैठकमें आपने जो विद्वत्ता पूर्ण भाषण दिया था, वह संसारके इतिहासमें एक महत्वकी वस्तु है।

इसके बाद भारत-सरकारने वार्शिंगटन-परिषद्में सम्मिलित होनेके लिए आपको अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा। अमेरिकामें भी आपके भाषणोंका ऐसा प्रभाव पड़ा कि भारतके विषयमें धोताओंके हृदयमें उच्च भाव उदय हुए बिना नहीं रहा।



## प्रश्न

- ( १ ) शास्त्रीजीका जीवन-चरित संक्षेप में लिखो  
 ( २ ) इस पाठके द्वितीय पन्निजेंद्र में चार अव्यय होंगे ।  
 ( ३ ) नीचे लिखे वाक्योंका अर्थ बताओ :—

व्यक्त, मन्त्र-मुग्ध, मौलिकता, अभिरुचि उपयुक्त, अनवरत,  
 प्रतिनिधि ।

- ( ४ ) 'भारत-सेवक-समिति' के संस्थापकका नाम बताओ । समितिके  
 सदस्य को किस बातकी प्रतिज्ञा करनी पड़ती है ?

- ( ५ ) नीचे लिखे मुहावरोंका अपने वाक्योंमें प्रयोग करो :—  
 आड़े हाथ लेना, फटकार बताना, जोड़ी नहीं रखना ।
-





जिस भोंदेपर भोंटे लेती, फूल-फूलकर भूल रही थी।  
 उसने भी है तुझे भुलाया, सारा प्रेम कुरंग हुआ है ॥ ५ ॥  
 भय क्या जुड़ सकती है तरंगों, किसकी है तू कौन है देर ?  
 इस दुनियाँमें कोई किसीके दुखमें कभी न संग हुआ है ॥ ६ ॥  
 “दुख क्या है !” “अभिमान प्रतिध्वनि,” है आशाका रूप निराशा ।  
 है जीवनका हेतु मरण ज्यों मणिका हेतु भुजंग हुआ है ॥ ७ ॥  
 पड़ी भूमिपर ०

### प्रश्न

- ( १ ) कृषी पत्तीकी पहले कैसी दशा थी ? उन्में क्या परिवर्तन हुआ ?
- ( २ ) तुम्हारी समझमें क्या कृषी पत्तीकी इस दशाका वही कारण है जो इस कवितामें बतहाया गया है ? यदि नहीं तो क्या कारण है ?
- ( ३ ) इस कवितामें क्या शिक्षा ग्रहण की जा सकती है ?
- ( ४ ) अन्तिम तीन पंक्तियोंका अर्थ लिखो ।
- ( ५ ) नीचे लिखे शब्दोंका प्रयोग वाक्य में करो :-  
 पुष्प, बदरंग, प्रतिध्वनि और भुजंग ।
- ( ६ ) “है जीवनका हेतु.....भुजंग हुआ है” इस वाक्यका अर्थ स्पष्ट करो ।



विधवा ( गार्ती है )

हे नाथ निज रूप हमको दिखाओ ।  
 तुम पास आओ या हमको बुलाओ ॥  
 धनवन्द छिपिये न धन श्याममें अथ ।  
 ज्योत्स्ना दिखाओ, सुधाको बहाओ ॥  
 पुष्पोंको अपनी हंसी दान देकर ।  
 कुछ तुम हंसो, कुछ हमें भी हंसाओ ॥  
 चरणोंके शूलोंको मृदु फूल काँजे ।  
 करके सुमनको सुफल प्रभु बनाओ ॥

बालक—माँ, पढ़ने क्या बिठाओगी ?

माँ ( बालककी ओर देखकर ) हाँ, बेटा अब तुम्हारे पढ़नेके दिन आ गये । जयदेव आचार्यकी पाठशालामें तुम्हें दो ही चार दिनमें पढ़ने बिठा दूँगी । जयदेवजी तुम्हारे पिताके सहपाठी और परम मित्र हैं । तुम्हारे पिता कहा करते थे कि जयदेवजीकी बुद्धि बड़ी तीव्र है । वे तुम्हें पुत्रकी तरह प्यार करेंगे ।

बालक—माँ, क्या पिताजीकी कुछ बातें तुम्हें याद हैं ? मुझे तो कुछ भी याद नहीं है ।

माँ—( आँसू पोंछती हुई ) बेटा, तुम्हारे पिताकी बातें मुझे खूब याद हैं । तुम्हें कैसे याद होती ! तुम तो केवल दस वर्षके थे, जब तुम्हारे पिताका स्वर्गवास हुआ । उनके ये अन्तिम शब्द मुझे न भूलेगे । उन्हीं शब्दोंके सहारे गत



( उठकर कृष्ण-मूर्तिके सामने जाती है, प्रणाम करती है। )  
 भगवन्, इस मनाथकी आँखोंके तारेकी रक्षा करो, उसे अपनी  
 भक्तिका अमोल रख दो ।

[ गोपाल नौ, नौ पुत्रता भाता है । सापने चनेली भी है । माँको  
 प्रणाम करते देव दोनों कृष्णमूर्तिको सादृश प्रणाम करते हैं । ]

( पञ्चम )

दूसरा दृश्य

[ माँ खड़ी है, गोपाल पुत्रके लिये अलग खड़ा है । चनेली बैठी चक्का  
 तोड़ रही है । ]

माँ—उत्त दिन तो तू पाट्यालाकी यड़ी प्रयाँता करता था;  
 कहता था, कई कहानियाँ सुनीं, एक श्लोक याद किया, यड़ा  
 जानन्द रहा; फिर आज जानेमें क्यों आनाकानी कर रहा है ?

गोपाल—( कुछ नहीं पोलता; मुँह फेर लेता है । )

चनेली—मैं बताऊँ, काकी ?

गोपाल—चुप-चुप ( माँकी साड़ीमें मुँह छिपा लेता है । )

चनेली—काकी, गोपालको पाट्याला तो अच्छी लगती है;  
 पर कल लौटते समय डरा था । इसीसे आज जानेमें संकोच  
 कर रहा है ।

माँ—क्यों रे गोपाल, यही बात है ? बतादे ।

गोपाल—हाँ

माँ—क्यों, डर काहेका ?

गोपाल—रास्तेमें जंगल पड़ता है । वहाँ लौटते समय बड़ा



माँ—स्वा कृष्ण-कन्हैया सचमुच मेरे साथ-साथ चलेगी ?

माँ—( घबरे स्वरसे ) हाँ बेटा, वे सदैव भक्तोंकी रक्षा करने हैं।

गोपाल—अच्छा माँ, जाता हूँ।

माँ—बनेली, घर जाओ, अब मुझे काम है।

[ बनेली-भारती हुई जाती है। गोपालकी माँ दृष्टि की मूर्च्छित मानने ऊपर प्रज्ञान बगती है ]

माँ—दीनोंके शस्त्र, अनार्योंके नाथ, आज मैंने बड़ा अपराध किया, अपने भोले-भाटे दालकको दहकाया . नही भगवान् बरकाया क्यों, तुम अवश्य उसकी रक्षा करोगे।

[ स्तब्ध ]

[ मेरठमें गोपालके सम्बन्ध—'दृष्टि-बर्ग'या आगे ..... बनेली बर्ग'या बनेली रहते हैं। उसमें सम्बन्ध है, "गोपाल, हाँ माँ, मैं वस हो हूँ ]

मौलिक दृष्टि

[ स्तब्ध स्वर । मुक्तोंकी आकाश ध्वनि देती है। वह आगे बनेली में लगे हुए हैं। ]

गोपाल—अब तुम मुझे सबकुछ मैं मानूँगा।

हम जो हो होगा हो, पर माँ तुम बहुत मेरे न भोले। अस्मा, दौड़नेको मैदा हो जाओ। अब, दौ, माँ !

गोपाल—( दौड़नेको मैदा होता है, पर ठिठक जाता है )  
माँ, मैं ही गया था। आज मुझेको दौड़ना पड़ा है। मुझे बहुत







गोपाल—( फिर पुकारता है ) नहीं आओगे ! नहीं आओगे  
गुरुदेवकी दृष्टिमें झूठा सिद्ध पारोगे ! एक बार, वन एक  
और आओ । अब मैं तुमसे कुछ न माँगूँगा ।

( गुन छिड़ कर उमकी और देखते हैं । )

[ वेलाध्यामे—'प्यार गोपाल ! मैं नहीं आ सकता ।

आचार्यके पास बिछा है, पर उनके दरपमें प्रेम नहीं है । '

सामने प्रष्ट नहीं हो सकता । "

( जयदेव और गोपाल दोनों गिरकर प्रणाम करते हैं । )

[ अन्त ]

पाँचवाँ दृश्य

[ जयदेव आचार्य सम्भाषीके वेशमें आते हैं । साथमें इन्का ल  
नित्य गदभा वस्त्र धारण किये हुए है । ]

जयदेव आचार्य भैरव्य, तुम क्यों मेरे साथ मिलते हो  
मेरा साथ छोड़ो और मुझे अपने गुरुदेवकी आज्ञामें जाने दो ।

भैरव्य नहीं गुरु देव, मुझे साथ करने की आज्ञा, मैं अपनी  
मर्यादा नहीं छोड़ूँगा और आपकी वही आज्ञाका पालन प्रेम  
सुनाऊँगा ।

जयदेव बगडा, गाओ, गाओ ।

भैरव्य ( गाना है )

बही मिलेगा आनन्ददा, भैरवदा ॥ बही ॥

भैरवदे भैरव गुरुदेव, भैरवदे गुरुदेव गुरुदेव ।

गुरुदेव, नन्दे, गानादे, प्रसाद भैरवदे, भैरव भैरव भैरव

भैरव भैरव दे भैरव, भैरव भैरव भैरव दे भैरव

जयदेव-कहाँ दूँ दूँ ? किस प्रकार मनको शुद्ध करें ?  
भगवान्ने कहा था "दिया है, पर प्रेम नहीं है।" किस  
तपस्यासे हृदयमें प्रेम उपजेगा ? गाओ चैतन्य, और गाओ ।

चैतन्य-- ( गाता है )

स्नेहमयी जन्मुभक्तिके घरमें, विरह-विधुर राधा अन्तरमें,  
कृष्णके अनन्त भक्त्यग्ने, या काला कुब्जाके घरमें,  
या इस वसुधाके उस पार कहीं मिलेगा प्राणाधार !  
जयदेव-छोड़ दूँ गा, वसुधाको छोड़ दूँ गा, इस बुढ़ापेमें  
और क्या सधेगा ? भगवान्, मुझे सुलाहो ।

चैतन्य ( फिर गाता है )

एत रुदम्य, कालिन्दी तटमें, गिरि जाह्नव वसुधाके पटमें,  
प्रज पार्श्व, यत, वशीपटमें, जन, जनपद, पथमें, पनपटमें,  
सौजा, सौज हुआ लाचार, नहीं मिला वह प्राणाधार ।

जयदेव-भलो, खलो, उसी भक्तप्रिय बालक गोपालके पास  
जाऊँ गा, उमीके सप्तगसे भगवान्को प्राप्त करूँ गा । वह आ-  
रहा है, पर आ रहा है, ( पुकारने है ) गोपाल ! गोपाल !

गोपाल ( आता है ) आप ही गुरुदेव, आप कहीं फिर  
गए हैं ! हम सब विद्वानों आपके पिता पगारुत हैं । ( चैतन्य-  
को और देखकर ) भैया, प्रणाम ।

गुरुदेव-पगारे गोपाल, गुरु तू ही और तिलक मे दूँ, क्या तो  
पगारे कालसे तुमको विमल मिलेगा ?

गोपाल-गुरुदेव मैं कुछ नहीं जानता, मेरी माताने ही मुझे

कृष्ण प्रेम सिखाया है। बलिये, ऊहीसे पूछेंगे। चेतन  
मैया, आग भी आइये।

[ वदार्थ ]

छठा दृश्य

[ गोपालका घर, कृष्ण मूर्तिके सामने जयदेव, चैतन्य और कलेश  
साथ गोपालकी माता आती है। ]

माता—आचार्य, मैं बेचारी क्या जानूँ ? इसी मूर्तिके स-  
हारे मैंने भगवान् का प्रेम पाया और यही इस बालकको सिखा-  
या। आइये हम सब प्रार्थना करें।

( सब गाने हैं )

हे नाथ निज रूप हमको दिवाओ। ( हय्यादि )

[ वदार्थ ]

मन्त्र

- ( १ ) गोपालने किस प्रकार भगवान् को अपने बजमें किया ?
- ( २ ) कष्टग्रस्ता होने समय मातामें गोपालकी कौन रक्षा काग था ?
- ( ३ ) जयदेवकी पुकार सुनकर भगवान् क्यों प्रकट न हुए ?
- ( ४ ) कौन स्थिति शब्दोंका अर्थ बताओ :—

स्वल्पना, शूल, स्नेहागार, भवत, अनिल, विह-विह, लम्ब।

- ( ५ ) सुमन्त्र-स्वर, शब्द-अन्तर, बज-बीदीमें समान-विषय बताओ।

## १५—रहोमके दोहे

( ले०—अब्दुरहोम खानखाना 'रहोम' )

लेखक-परिचय—जन्म म० १५५३—मृत्यु म० १६२०। ये प्रसिद्ध मुगल सादार बैरमशां खानखानाके पुत्र थे। अरबी, फारसी, तुर्की और संस्कृतके अच्छे विद्वान् और हिन्दी काव्यके पूरे मर्मज्ञ थे। तुलसी-दानजी और इनके बीच बड़ा स्नेह था। मनुष्य-जीवनकी नाना कुराओंपर रहोमने बड़े नार्मिक दोहे कहे हैं। जो घर-घर प्रचलित हैं। तुलसीके समान रहोमने भी प्रकृतात्मा और अवयवी दोनोंमें रचनाएँ की हैं। इनकी मुख्य रचनाएँ ये हैं—“दोहावली” “वर्णनायिका-भेद,” “शृङ्गार-मोरच।”

तख्त फल नहीं खात है, सखर पियहि न पान ।

कवि रहोम पर काज हित, सम्पति संचहि मुजान ॥ १ ॥

कह रहोम सम्पति सगे, चनत चटुत यहु रीत ।

चिपति कसौटी जे कसे, तेई सांचे भीत ॥ २ ॥

तयही लगि जीयो भलो, दीयो परे न धोम ।

दिन दीयो जीयो जगत, हमहि न रखे रहोम ॥ ३ ॥

अमर बेलि बिन मूलकां, प्रति पालन है ताहि ।

रहोम ऐसे प्रभुहि तजि, खोजत किरिये काहि ॥ ४ ॥

दीख दोहा अर्थके, आखर धोरे आहि ।

ज्यों रहोम नद कुण्डली, सिमिटि कृदि चढ़िजाहि ॥ ५ ॥

बड़े दीनको दुख सुने, लेन दया उर आनि ।

हरि हार्यी सों कद हुनी, कह रहोम पहिचानि ॥ ६ ॥

रहिमान राम न उर धरै, रहत विषय लपटाय ।  
 पसु खर ग्यात सवाद सों, गुर गुलिआये खाय ॥ ७ ॥  
 फौन बड़ाई जलधि मिलि, गंगनाम भो धीम ।  
 केहि की प्रभुता नहीं घटी, पर घर गये रहीम ॥ ८ ॥  
 जो पुरुषारथ ते कहँ, सम्पति मिलनि रहीम ।  
 पेट लागि घेराट घर तपन रसोई भीम ? ॥ ९ ॥  
 ज्यों रहीम गति दीपकी, कुल कपूत गति सोई ।  
 पारे उजियारे लगे, बड़े अंधेरो होई ॥ १० ॥  
 छोटन सों सोंहैं बड़े, कह रहीम यह लेख ।  
 सहसनको हय पाँधियत, लै दमरीकी मेख ॥ ११ ॥  
 माँगे घटत रहीम पैद, किन्तौ करौ बडि काम ।  
 तीन पैग यमुधा करी, तऊ बावनै नाम ॥ १२ ॥  
 रहिमान अब घे विरिछ कहँ, जिनकी छाँह गंभीर ।  
 यागन विच विच देखियत, सेंहुड़, काँज करीर ॥ १३ ॥  
 रहिमान मनहि लगाइके, देखिलेहु निन कोइ ।  
 नरको बस करियो कहा, नारायन बस होइ ॥ १४ ॥  
 रहिमान लाभ भली करै, अगुनी अगुन न जाय ।  
 राग सुनत, पय पियत हँ, साँप सहज धरि खाय ॥ १५ ॥  
 मथत मथत माखन रहै, दही मही चिल्लाव ।  
 रहिमान सोई मीन है, भीर परे उहराय ॥ १६ ॥  
 गगन चढ़े फिर क्यों गिरे, रहिमान बहरी बाज ।  
 केरि आय बन्धन परे, पेट अधमके काज ॥ १७ ॥

२ खीम मुसकिल परी, गाढ़े दोड़ काम ।  
 तंग बहै सो जग नारी, झूठे मिलै न राम ॥ १८ ॥  
 रिमन सोड़ का घरी, जगनी जोर लपार ।  
 ते पवि रागन हार है, भागन भागन हार ॥ १९ ॥  
 दो खीम मुस होत है, उपकारीके संग ।  
 लहन धारैके तंग, अंगी मेहदीको रंग ॥ २० ॥

## ५३

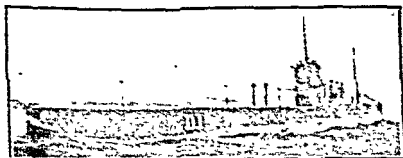
१) सर्व सम्पत्तियों का ब्यवहार —

२-११४२, दि. ११/१२/४३ अं. ३३, अ. ३३, अ. ३३ ।

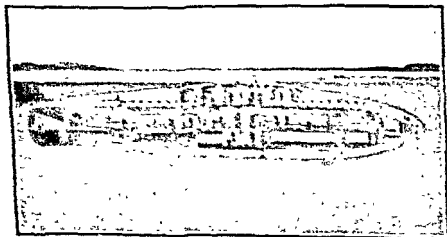
[illegible][illegible]







पनडुब्बी जहाज़ ( पानीके ऊपर )



पनडुब्बी जहाज़ पानीके भीतर



हॉर्लेड अमेरिका पहुँचा—उत्तराह और हॉर्लेड दिखत ।  
 किन्तु वहाँ भी निराशा और दिन्तर्भाषा गूँथ पाया । यह कि  
 कई पत्र-संग्रहादक उसमें मिलने धार्य । उसने अपना नक्शा  
 उन्हें दिखलाया, किन्तु उनको यह दिमागमें उसकी शारीक  
 शाने न घुस सकी ।

हॉर्लेडके पास रुपये थे नहीं मर्यादका लटका था । अमे-  
 रिकामें भी साम्बरी करना शुरू किया । कुछ रुपये जमा कर  
 लेनेपर उसको फिर वहाँ धुन सवार हुई । अपने हाथसे काटका  
 एक छोटा-सा पनडुब्बी जहाज़ बनाना शुरू किया । उसका  
 न्प-रंग सिगरेटके जैसा था ; भीतर एक पेट्रोल-इंजिन लगा  
 था । उसे उठाकर एक तालाबमें लाया । अफसोस, काटका  
 बना होनेके कारण उसके भीतर पानी पहुँचने लगा, पेट्रोल-  
 इंजिन भी ठीकसे काम न देसका ! पनडुब्बी जहाज़का यह  
 नमूना बेकार साधित हुआ ।

किन्तु उसको अपनी कल्पना पर विश्वास था । उस काटके  
 नमूने बनानेके बाद उसके मनमें यह बात जम गयी कि अगर  
 धातुसे बनाया जाय और अच्छा पेट्रोल-इंजिन लगाया जाय  
 तो, पनडुब्बी जहाज़ ज़रूर तैयार हो सकता है ।

उत्ते एक सुयोग मिलगया । आयरलैंडके बहुत-से लोग  
 उस समय अमेरिकामें रहते थे । वे लोग अंगरेजी सरकारके  
 विद्रोही थे और किसी प्रकार उसे नेस्तनाबूद करने पर  
 तुले थे । हॉर्लेड उनसे मिला, अपना नक्शा उन्हें दिखलाया

और उन्हें विश्वास दिलाया कि मेरा पनडुर्बी जहाज  
 तैयार हुआ तो बातचीत में बहुतों के चेहरे खिलेंगे ।

विद्रोही दल के पास लगभग सवा दो लाख रुपये थे  
 रुपये होलैंड को मुमुर्दे किये गये । बहुत दिनों की प्रतीक्षा  
 पूरी होने लगी थी । बड़े उत्साह और परिश्रम से  
 काम शुरू किया । भाविर पनडुर्बी जहाज तैयार होना  
 बिल्कुल पूरी गारंटी न मिली । यह भाग्यनीति पानी के बीच  
 चल सकता था और सतह में पानी के ऊपर भी लाया जा सकता  
 था । इसके अतिरिक्त इसके भीतर सौगन्ध के लिए एक  
 मी काली प्रयत्न था । इनने पर भी कई दोष थे, विशेष  
 किये बिना इसके काम में लाजा गैर मुमकिन था ।

होलैंड उन्हें दूर करने में लगा । उस पनडुर्बी को देखकर  
 विद्रोही दलवालों को विश्वास हो गया था कि गारंटी मिलेगी ।  
 उन्होंने रुपये लक्ष्य कर उसे दूसरा पनडुर्बी बनाने का  
 आदेश दिया । दूसरा पनडुर्बी भी तैयार हुआ कि  
 कृष्ण दृश्य । दूसरा समी दृश्य रह गये । इस प्रसिद्ध  
 समुद्र की लहरों में गुलफ्त में गयेगा इसकी कल्पना प्रयत्न  
 की ।

विद्रोही दल के पास एक दुर्घटना थी, विशेष  
 होलैंड का सब विचार काया विद्रोही विद्रोह । इस वि  
 दल में बहुत हो गया । वह सत्य दृष्टिकोण दृष्टि पर  
 दृष्टिकोण दृष्टि में है । इस पनडुर्बी को देखकर विद्रोही



## १७—मन

( हि० एक "साधु" नाम्ना )

( १ )

कौशला कौशले की कामकला रहा नू कर्म,  
 मूढता जो धरा लो नू निम्नता भी निम्नता मूढता ।  
 मूर्खता होकर जैसा नू मन मानिकता,  
 मूर्खता होकर दुभा नू कभी फूलना ।  
 मूढता रहा हूँ, मूर्ख मूढता बना नू कभी,  
 मूढता बना या भगवन् प्रणिपत्य-सा ।  
 भारी जो दुभा लो दुभा भारी नू मनोमो मन,  
 हलका दुभा लो दुभा हलका कभी मूढता ।

( २ )

नाना नाच नाचा हो नयानेरे न तेरे जो कि,  
 ऊँच-नीच राव-रंक ऐसा कौन जन है '  
 पानी साम तेरे लिए जो न हो बहाया गया,  
 पाया गया यमुना में ऐसा कौन धन है '  
 तेरे परिपीड़न में श्राप यादता है प्राण,  
 ब्राहि-ब्राहि पाहि-पाहि रह रहा मन है ।  
 कैसी हो दमन मेरा गमन पवन सा है,  
 फोमड़ सुमन-सा बड़ाही कड़ा मन है ॥

## प्रश्न

- ( १ ) पहले पदका भाषार्थ बताओ ।  
 ( २ ) दूसरे पदके अन्तिम दो पंक्तियोंके भाव समझाओ ।  
 ( ३ ) नीचे लिखे शब्दोंका अर्थ बताओ :—  
 दुःस्वप्न, शूद्र, कृष्ट, धान, प्राप्ति, पाहि ।  
 ( ४ ) नीचे लिखे शब्दोंका प्रयोग अपने बनाये वाक्योंमें करो :—  
 सुन्पहीन, दमन, गमन, समन ।

—\*—

## १८-फा-हियानकी भारत-यात्रा

( ले०—पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी )

रेलक- पश्चिम— द्विवेदीजीका जन्म संवत् १९२१ में राय बरेलीके शैलज दुर्गा गाँवमें हुआ । पढ़ना समाप्त करनेपर आपने रेलवे-विभागमें नौकरी की । रेलवेकी नौकरी के साथ-साथ आपकी साहित्य-सेवा भी जारी थी । प्रतिदिन पत्रिका "साप्ताहिकी" का अनेक वर्षोंतक सम्पादन कर आपने हिन्दीका बड़ा उपकार किया है । आपका कई भाषाओंपर अधिकार है । हिन्दीमें तो आपने नवमुग उपस्थित कर दिया है । हथर परीम-नौत वर्षों के भीतर खड़ी बोलीको जैसा प्रोत्साहन आपसे मिला है, वैसा प्रोत्साहन किसी अन्यसे नहीं । आप जैन महारथीसे हिन्दी-साहित्य घन्य है ।

प्राचीन भारतके इतिहासका थोड़ा-बहुत पता जो हमें लगता है, वह ग्रीक और चीनी यात्रियोंके यात्रा-वृत्तान्तसे लगता है । प्रोत्साहिले इतने देशमें सैनिक, शासक अथवा राज-श्रुत



बनकर आते थे। इसीसे उनके लेखोंमें अधिकतर राजनीति, शासन-पद्धति और भौगोलिक बातोंका ही है, उन्होंने भारतीय धर्म और शास्त्रोंकी छानबीन विशेष परवाह नहीं की। चिनी यात्रियोंका कुछ और ही खेला था। वे विद्वान् थे। उन्होंने हजारों मीलकी यात्रा की थी कि वे यौद्धोंके पवित्र स्थानोंका दर्शन करें, बौद्ध धर्मकी पुस्तकें पढ़कर और उस भाषाको पढ़ें जिसमें वे पुस्तकें लिखी गयी थीं। इन यात्राओंमें उनको नाना प्रकारके श्रम सहने पड़े। कभी वे लूटेगये, कभी वे रास्ता भटक मरकर स्थानमें भटकते फिरे और कभी उन्हें जंगली जानवरोंका सामना करना पड़ा। परन्तु इतना सब होनेपर भी वे केवल विद्या और धर्म-प्रेमके कारण भारतवर्षमें घूमने लगे। चीनी यात्रियोंमें तान्त्से नाम बहुत प्रसिद्ध है--फा-हियान, संगयान और हेनसांग। इन तीनोंने अपना अपना यात्राका वृत्तान्त लिखा है। उनसे भारतीय सभ्यताका बहुत-कुछ पता चलता है। प्रसिद्ध चीनी यात्रियोंमें फा-हियान सबसे पहले भारतमें आया। उसीकी यात्राका सक्षिप्त हाल नीचे लिखा जाता है।

फा-हियान मध्य चीनका निवासी था। ४०० ईसा में वह अपने देशमें भारत-यात्राके लिए निकला। इस यात्रामें उसका मतलब बौद्ध तीर्थोंके दर्शन और बौद्ध धर्मकी पुस्तकोंका संग्रह करना था।

चीनसे खुतन होता हुआ फा-हियान काबुल आया। वहाँ-से वह स्वात, गन्धार और तक्षशिला होता हुआ पेशावर पहुँचा। पेशावरमें उसने एक बड़ा जंवा, सुन्दर और मजबूत चाँद स्तूप देखा, सिन्धुनदी पारकर वह मयुरा आया।

मयुरासे फा-हियान कन्नौज आया। यह नगर उस समय गुन राजाओंकी राजधानी था। उसने कन्नौजके विषयमें इसके सिवा कुछ नहीं लिखा कि वहाँ दो संधाराम थे। कोसल राज्यकी प्राचीन राजधानी ध्रावस्ती उजाड़ पड़ी थी, उसमें केवल दो सौ कुटुम्ब निवास करते थे। जैतवन, जहाँ भगवान् बुद्धने धर्मोपदेश किया था, अच्छी दशामें था। वहाँ एक सुन्दर विहार था। विहारके पास एक तालाब था, जिसका जल बड़ा निर्मल था। कई घाग भी थे, जिनसे विहारकी शोभा बढ़ गयी थी। विहारमें रहनेवाले साधुओंने फा-हियान-फा हर्षपूर्वक स्वागत किया।

भगवान् बुद्धके जन्मस्थान कापिलवस्तुकी दशा फा-हियानके समयमें पूरी थी। वहाँ न कोई राजा था न प्रजा। नगर प्रायः उजाड़ था। थोड़े-से साधु और दस-बीस अन्य जन वहाँ थे। पुरानी नगर भी, जहाँ भगवान् बुद्धकी मृत्यु हुई थी, पूरी दशामें था। उस वैशाली नगरको, जहाँ बौद्ध धर्मकी पुस्तकोंका संग्रह करनेके लिए बौद्धोंका दूसरा सम्मेलन हुआ था, फा-हियानने अच्छी दशामें पाया। प्रसिद्ध पाटली-पुत्रके विषयमें फा-हियानका कथन है कि अशोकके मृत्युके समीप ही

यह वहाँ मरे, जाते बने । इस जहाजके यात्रियोंमें एक स्थानी बड़ा सज्जन था, यह का-हियानसे प्रेम करने लगा था। मछाहोंकी इस सन्नाहका उगने घोर प्रतिपाद किया। उम्मे के कारण बेगारे का-हियान किसी निर्जन टापूमें छोड़ देनेसे बच गया। ८२ दिनकी यात्राके बाद दक्षिणी चीनके समुद्र तटपर यह समुद्रज उतर गया और अपनी जन्म भूमिके दशनेके उमने अपनेको शत्रुच्य माना।

### पञ्च

- ( १ ) का-हियानने भागलही यात्रा कब और किस उद्देश्यके की थी !
- ( २ ) उमने ककिलवन्तु, राजगुरु और वास्ली-गुरुके सम्बन्धमें क्या किया है ?
- ( ३ ) का-हियान किस मार्गसे इस देशमें आया और किस शक्ति पराजित गया ?
- ( ४ ) उन्निषाद, शत्रुच्य, बांदि-गुरु, और सीरागुरुका क्रान्त भक्त बनाने हुए वाक्यामें कौनसे ।
- ( ५ ) बौद्ध-धर्ममें क्या भविष्य है ? इसे किसने बताया था ? इसके विषयमें तुम जो कुछ जानते हो, लिखो ।

## १९—क्या से क्या

( लेखक—अयोध्यासिंह उपाध्याय हरि-औष )

लेखक-परिचय—उपाध्यायजीका जन्म संवत् १९२३ में हुआ । आपका जन्मस्थान मिर्जापुराबाद, जिला आजमगढ़ है । आप सनातन ब्राह्मण हैं । उर्दू, पंजाबी, संस्कृत, बंगला और हिन्दीमें आपकी अच्छी वाक्यता है । मिर सन्नदापकें बाबा राम सिंहजी आपके कविता-गुरु हैं । आप २० वर्ष तक आजमगढ़के मद्र कानूनगो रह चुके हैं । अब पेन्शन ले ली है और पानोंके हिन्दू-विरूपविद्यालयमें हिन्दीके अध्यापक हैं । गद्य और पद्य दोनों ही आप ऊँची धँसोंके लिखते हैं । आपका अनुकान्त महा काव्य "प्रियद्वाम" "सुभने चौरे" एवं "दोष-चौरे" हिन्दी संसारमें एकदम नयी चीज़ है । आप हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनके चौदहवें अधिवेशनके महापति बनावे गये थे । उपाध्यायजीको साहित्य-सेवा प्रशंसनीय है ।

( १ )

धूम्रमें धाक निजगदी खाली ।

रहगये नीचे दाढ़के न पते ॥

अब यहाँ दण्ड-दवा बनारा है ।

आज है बान-यात्रमें दपते ॥

( २ )

आज दिन पल है बरसकी पौ ।

हुन बरसना मत उल्टे मर दिन ॥

तब लखते मरते रहे दिनके ।

सकल आज ये पदे मन-दिन ॥

( ३ )

आज घेड़ंग बनगये हैं ये ।

ढंग जिनमें भरे हुए कुल थे ॥

बाँध सकने नहीं कमर भी ये ।

बाँधते जो समुद्रपर पुल थे ।

( ४ )

जो रहे आसमानपर उड़ते ।

आज उनके कतर गये हैं पर ॥

सिर उठाना उन्हें पहाड़ हुआ ।

जो उठाते पहाड़ उँगुली पर ॥

( ५ )

हैं रहे डूब घे गड़हियों में ।

ये तरह बार-बार खा धोखा ॥

सूखता था समुद्र देख जिन्हें ।

था जिन्होंने समुद्रको सोखा ॥

( ६ )

जो सदा मारते रहे पाला ।

ये पड़े टाल-टूलके पाले ॥

आज है गाल मारने बेटे ।

जंगलोंके खंगालने वाले ॥

( ७६ )

( ७ )

तप सहारे न क्या सके कर जो ।

मन उन्हींका मरा बहुत हारा ॥

हे लहू घूँट आज वे पीते ।

पी गये थे समुद्र जो सारा ।

( ८ )

सप तख आज हार वे बैठे ।

जो कभी थे न हारने वाले ।

आप अथ उबर नहीं पाते ।

स्वर्गके भी उबारने वाले ।

( ९ )

पेड़को जो उखाड़ लेते थे ।

हे न सकते उखाड़ वे मोथे ।

वे नहीं कूद फाँद कर पाते ।

फाँद जाते समुद्रको जो थे ॥

( १० )

जो जगत-जाल तोड़ देते थे ।

तोड़ सक्ते यही नहीं जाल ।

वे नये मय दही नहीं पाते ।

यहाँ जिन्होंने समुद्र मय बना ॥

## प्रश्न

- ( १ ) "बोले जो समुद्र पर पुछ थे," "जो उठते पड़ाई बँगुनी ल"  
"पी गये थे समुद्र जो भाग" "जो आते समुद्र को जे बँ"  
इन पंक्तियोंमें किन-किनकी ओर संकेत है?
- ( २ ) दूधो, छे, और सातवे पदका अर्थ बताओ।
- ( ३ ) नीचे लिखे शब्दोंका अर्थ बताओ :—  
धाक, रतन, पाछा,
- ( ४ ) नीचे लिखे मुशबरीका अपने वाक्यमें प्रयोग करो :—  
घूलमें मिलना, घूल बामना, पर कन जाना, पड़ाई शोक,  
पाले पड़ना, लड़का घोट पीना।

## २०—बेतारका चमत्कार

( ले०—श्यामनारायण कपूर बी० एस सी )

आजकल चारों ओर विज्ञानकी सूनी धोल रही है। विज्ञानके चमत्कार और आश्चर्य-जनक कार्य देखकर दार्शनिकोंके उँगली दधानी पड़ती है। विज्ञानकी सहायता से नित्य प्रति एक-न एक नया तोहफा पेश कर दिया जाता है, किन्तु भारतमें यह सब चमत्कारपूर्ण कार्य बहुत देरमें देखनेमें आते हैं। पश्चात्य देशोंमें यह सब याने विरोध आश्चर्यजनक नहीं समझी जाती। अकेले रेडियोंकी ही सहायतासे अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो रहे हैं।

अन्य देशों की तुलना में भारत में ब्राडकास्टिंग बहुत पिछड़ा हुआ है। पण्डित जी मनोविनोदका यह सत्य से सस्ता मानते हैं। भारत में (१०) सर्व करके कोई भी व्यक्ति जरा-सा गिट्टा दबाकर ५-६ घंटे तक संगीत, वाद्य, वार्तालाप और ऐतिहासिकी सुबहोंका आनंद प्राप्त कर सकता है। कलकत्ता-बर्मा देने ब्राडकास्टिंग स्टेशन के लिए केवल २०) न्यूयॉर्क स्थानों में वायफेस-वेस्टर्न कान चल सकता है। इस तरह कलकत्ता बर्मा देने रहनेवाला कोई भी व्यक्ति २०) की मर्यादा देकर (१०) न्यूयॉर्क के सर्व करके सतत कम से कम २००० घंटे तक पर पड़े गहन-रहने वाले वार्तालाप, भाष्य और ऐतिहासिकी समाचार सुन सकता है। इस विचार से मुक्ति-प्राप्ति एक पैसा प्रति घंटे सर्व पड़ेगा।

इस तरहका नया ब्राडकास्टिंग स्टेशन के आस-पास ही काम हो सकता है। इसके द्वारा मात्र ऐतिहासिक-संस्कृति तथा संवाद सुन सकते हैं। लाइव स्पीकर लगाकर आपको विनम्र मनोसेविका-भाष्य प्राप्त प्रयोग। लाइव स्पीकर, सहित एक बहुत अच्छा मेटा (२००) में मिल जाता है। आधुनिक रेडियो-का विचारों के ही स्थान सुनते हैं : उन्हें बालू करने में कुछ दिनों काय नये करने होते। अन्य पिछड़े-सी रेडियोवाले करने के समान एक बालू दबाये होना है। इस प्रकार के कामों में विनम्र परत में बहुत कम सर्व होती है।

यह सब आधुनिक बातें हैं। पण्डित जीने होते हैं, यह प्रक



सर्वसाधारणको अक्सर परेशान किया करता है। पर सभी कार्य-पद्धति अब समझना कुछ अधिक कठिन नहीं है। अब कोई व्यक्ति गाता या बोलता है, तब उसके स्वयंसे वायुपासकी हवामें कम्पन पैदा हो जाता है। ब्राडकास्टिंग स्टेशन पर यही कम्पन सूक्ष्म शब्द-ग्राही यन्त्र अथवा माइक्रोफोन में ग्रहण कर लिये जाते हैं और माइक्रोफोनके डाइफ्राममें ठीक वैसे ही कम्पन पैदा हो जाने हैं। यह कम्पन वैद्युतिक कम्पन उत्पन्न करते हैं। प्रेषक-यन्त्र इन्हीं वैद्युतिक कम्पनोंको वायुमें भी उत्पन्न कर देता है। वायुके कम्पन प्रकाश जैसी तरंगरूपारसे चारों ओर दीड जाते हैं। वायरलेससेट या रेडियोका एरिएल इन्हीं कम्पनोंको ग्रहण करलेता है, और ग्राहक फन्ने डाइफ्राममें ठीक प्रेषक-यन्त्र जैसे कम्पन पैदा करता है। ग्राहक यन्त्रका डाइफ्राम या लाउड स्पीकरका डाइफ्राम कांपने लगता है। डाइफ्रामके सामनेकी हवामें कम्पन पैदा हो जाता है और आप ब्राडकास्टिंग स्टेशन द्वारा प्रेषित गायन वा संगीतको सुनने लगते हैं। यह सब काम पलक मारते हो जाता है।

यह तो साधारण ब्राडकास्टिंगकी बात है। परन्तु अब जो समाचार मिले हैं, वे इससे कहीं अधिक कीतुहलजनक हैं। बेतारकी बंदौलत कुछ ऐसे यन्त्र बन गये हैं, जिनकी सहायतासे आप घर बैठे देख सकेंगे कि इस समय लन्दन या अमेरिकामें क्या हो रहा है, अथवा समुद्रकी तह या वायु-मण्डलमें घिरा करनेवाले हवाई जहाजमें कौन-सी घटनाएँ घटित हो रही हैं।

इनसे यन्त्रोक्त नाम दूर-दर्शन या टेलिविज़न-यन्त्र खसगा गया है। थोड़ी-थोड़ी दूरकी घटनाएँ देखनेमें तो ये यन्त्र सफलता प्राप्त ही कर चुके हैं और काममें भी लाये जाते हैं। प्रायोगिक रूपमें दूर-दूरकी घटनाएँ देखी जा चुकी हैं। अब शीघ्र ही यह दिन आनेवाला है जब आप अपने कमरेमें बैठे-बैठे एक स्थान दबाकर चीन या जापानका हाल देख सकेंगे, या उधरसे तर्कालत ऊयजानेपर पेरिशकी सैर करेंगे।

### प्रश्न

- ( १ ) रेडियो द्वारा गाना आदि कैसे सुनाई पड़ते हैं, समझाओ।
- ( २ ) यह यन्त्र किस स्थानमें उपयोगमें लाया जा सकता है ?
- ( ३ ) इस यन्त्र का नाम बताओ जिसके द्वारा हम घर बैठे दूर-दूर की घटनाएँ देख सकते हैं ?
- ( ४ ) निम्न लिखित मुहावरोंका अपने बनाये वाक्योंमें प्रयोग करो :-  
 सुती बोलती, दाँतों तक उँगली दबानी, पलक मारते।

## २१—अन्तिम अभिलाष

( ले०—श्रीशम्भूदयाल सक्सेना साहित्यरत्न )

आता हूँ—पर नाथ, साथ अभिलाष लिये आता हूँ ।  
 श्री चरणोंमें यहीं एक अवशेष चिनय लाता हूँ ॥  
 जन्मूँ किसी रूपमें फिर तो यहीं रम्य भूतल हो ।  
 यही प्राम्य जीयन हो मेरा, यही केलिका स्थल हो ॥१॥  
 यही स्वजन हों, यही सप्ता हों, यही मित्र हों प्यारे ।  
 यही हिनैर्षी, यही वन्धु हों, यही कुटुम्बी सारे ॥  
 पशु-पक्षी हों यही, यही दूटा-फूटा-सा घर हो ।  
 हरे-भरे हों स्नेह यही गहरा नीला सरथर हो ॥२॥  
 ऐसी ही प्रभात बेला हो, यही सान्ध्यकी लाली ।  
 सुखकर उज्ज्वल दिवस यही हों यही शर्वरी काली ॥  
 तना, चितान-मुल्य यह प्यारा विस्तृत नीलाम्बर हो ।  
 शीतल-मन्द-सुगन्ध-प्रवाहित यही वायु सुन्दर हो ॥३॥  
 इसका एक-कीद भी होना मेरे मन भाता हो ।  
 उड़ते हुए वायुमें इसके कण-कणसे नाता हो ॥  
 फिर-फिर जन्मूँ मरूँ पुनः पर रहूँ न इससे न्यारा ।  
 राज-वेशसे भी स्वदेशका रंक-रूप हो प्यारा ॥४॥

प्रश्न

( १ ) नीचे किये शब्दों का अर्थ बताओ —

अवशेष, रम्य, प्राम्य, शर्वरी, चितान, प्रवाहित

( २ ) यह कविता किस अवसरकी है ?

- 1) पापों से निजात मिलेगी ?  
2) पापों से निजात मिलेगी ?

२२—एक उदार मन्त्री

( टी०—सामान्य सैनिकसामान्य टी० ए० )

[illegible]

उन्होंने राजाका एक मन्त्री बड़ा सुशील था। वह आगे  
जाना आदर करता और पाँछे भी उनके गुण कहता था।  
मंत्रिकी उसका एक काम राजाकी आँखोंमें बुरा अंवा,  
सिगिर राजाने उत्तर दुर्माता दिया और उसे कैद कर लिया।  
राजके सिपाही उसके दात-मानसे उसकी ओर हो रहे थे और  
उसके दृष्टके दिनों उसके साथ बड़ी मेहरबानी करते थे और  
उसके राजा बसन्त करना बिलाने होक न समझा।

## २३—वामनावतार

( ले०—रावदेवीप्रसाद “पूर्ण” )

लेखक-परिचय—रावदेवीप्रसाद “पूर्ण” बी० ए० बी० एस्० का मार्गशीर्ष कृष्ण १३, सं० १९२५ में जयलपुरमें हुआ । “पूर्ण” श्री स्वर्णमान हिन्दी-कवियोंमें बहुत ऊँचा स्थान रखते थे । इनकी लिखी पुस्तकितनी ही पुस्तकें हैं । “चन्द्रकला-मामुकुमार नाटक” और “धागा-धावन” बहुत प्रसिद्ध हैं । पहिले ये ‘रसिक-वाटिका’ नामक कविता पुस्तक हर महीने निकालते थे । पीछे ‘धर्मशकुमाकर’ नामका एक मासिक पत्र निकालने लगे थे । ‘पूर्ण’ जी थे तो काव्यम्य, पर आचरण और विद्वान् बड़े-बड़े विद्वान् माझगोंमें भी कम न थे । ये कानपुरमें बकासत करते थे और वहाँके नामी वकीलोंमें इनकी गगना थी । हिन्दी कविताके लिए बड़े ही दुर्भाग्यकी बात है कि वह “पूर्ण” जीके द्वारा पूर्ण न होने पायी । यह विद्वान्, यह नामी वकील और यह धर्मप्राण पुरुष केवल ४९ वर्षोंमें अकम्पामें ३० जून १९१५ को स्वर्गवासी हो गया ।

अदेवनकी उर आनि अनीनि,

नियान्नको सुर-पादन-रीति ।

सुधारनको जनको अधिकार,

धरयो हरि वामनको अवतार ॥ १ ॥

बड़े जनको नहि मोगन जोग,

फरै छल-साधन में लघु लोग ।

रमापति विष्णु असङ्ग अनूप;

धरयो पहि कारन वामन रूप ॥ २ ॥

भले सजि सज, बले मग-भूमि;

पगो पग लेनि धरातल भूमि ।

प्रसून घने घग्गे सुर-गोत

दियापर-नेज निलायर होत ॥ ३ ॥

जयै पहुँचे बलि-भूपति-द्वार;

गये सप मोह रहे मन बार ।

कहो कोउ चंद, कायो कोउ भान;

कोऊ समझ्यो तप मूरतिमान ॥ ४ ॥

गयो बलि भूपति पै दरबान;

कियो द्विजको इमि रूप यखान;

“सुनो दिनती मम दानव-भूप;

खड़ो दरपै घटु एक अनूप ॥ ५ ॥

विराजंत है तनुपै मृग-छाल,

छटा-जुत छाजत छत्र विशाल ।

कमंडलु दंड लसै कर माहि;

महादुतिकी उपमा जग नाहि ॥ ६ ॥

यड़े दृग है अरविंद समान;

प्रलय भुजा गज-सुंड-प्रमान ।

बड़ो तपवान बड़ो गुन-गेह;

अहै पर वाचन अंगुल देह ॥ ७ ॥

## २३—वामनावतार

( जे०—रायदेवप्रसाद "पूर्ण" )

लेखक-परिचय—रायदेवप्रसाद "पूर्ण" जी० ए० जी० एल० का मार्गशीर्ष कृष्ण १३, सं० १९२५ में अकलपुरमें हुआ । "पूर्ण" जी० मान हिन्दी-कवियोंमें बहुत ऊँचा स्थान रखते थे । इनकी छिपी हुई कितनी ही पुस्तकें हैं । "चन्द्रकला-भामुकुमार नाटक" और "धागाध धावन" बहुत प्रसिद्ध हैं । पढ़िये ये 'रसिक-वाटिका' नामक कविता पुस्तक हर महीने निकालते थे । पीछेसे 'धर्मसुकुमाकर' नामका एक मासिक ल निकालने लगे थे । 'पूर्ण' जी० थे तो काव्य, पर आचरण और विद्वान् बड़े-बड़ेविद्वान् ब्राह्मणोंसे भी कम न थे । ये कानपुरमें बसालन करते थे और वहाँके नामी बकीलोंमें इनकी गगना थी । हिन्दी कविताके लिये वही दुर्भाग्यकी बात है कि यह "पूर्ण" जी०के द्वारा पूर्ण न होने पायी । यह विद्वान्, यह नामी बकील और यह धर्मप्राण पुरुष केवल ४५ वर्षमें अवस्थामें ३० जून १९१५ को स्वर्गवासी हो गया ।

अवेद्यनकी उर आनि अर्नाति,

निवाहनको सुर-पालन-रीति ।

सुधारनको जनको अधिकार,

धरयो हरि वामनको अवतार ॥ १ ॥

यडे जनको नहि माँगन जोग;

फर्ये छल-साधन में लघु लोग ।

रमापति विष्णु असङ्ग अनूप;

धरयो गहि कारन वामन रूप ॥ २ ॥

मो गति रास, मोहि मग-भूमि,

पगो पग तेति धरातल भूमि ।

मनस एते दामन मृग-भोज

दिवस-जेल नितास होत ॥ ३ ॥

जसे पापे बलि-भूषति-जग;

गये तप मोह रहे मन धार ।

करो योड नंद, करो योड भान;

योड समथो तप मृग-निमान ॥ ४ ॥

गयो बलि भूमि पे दरधान;

बियो छितको इमि रूप दरधान;

“सुनौ पितरौ मन दानप-भूष:

रडो दरपे पट्ट एक अनूप ॥ ५ ॥

पिराजत है तनुपे मृग-छाल,

छत्र-छत्र छाजत छत्र पिशाल ।

कमंडलु दंड लतै फर मारि;

महादुतिकी उपमा जग नाहि ॥ ६ ॥

पड़े हग है अरविद समान;

मल्लेय भुजा गज-भुंड-प्रमान ।

पड़ो तपयल पड़ो गुन-नीर;

अहै पर धारन अंगुल देह ॥ ७ ॥



मः कनि द्युतकः विमलः

कनिः पुनः सः द्युतः कनिः

किया तव रामन यः प्रवेशः

दुःखान्न जगम सौ वः वः

दुःखान्न विमलान्न सः पुनः भू

विमलान्न दुःखान्न सः सः सः

कनिः निज दुःखान्न सः सः सः

अनेक विमलान्न सः सः सः

सः अनुमल सः पुनः सः

विमलान्न सः सः सः सः

दुःखान्न सः सः सः सः

सः सः सः सः सः सः

सः सः सः सः सः सः

सः सः सः सः सः सः

विचार कलु कलु जोग विमलः

"अरे बलि शुभ सः सः सः

"अरे मतिमान् ' कहाँ तव सः

त दे यदुको अवनः सः सः

सः लघु देवतान् यः व्यक्तः

विमलान्न पगलम है अरु शक्ति

भरि जनि भूल करे मम भूप,

भई सः सः सः सः सः सः

अरे पग नीन धरा मन जान;

बुरे परिणाम भरो यह दान" ॥१३॥

बली बलि यों गुरु सों कर जोरि,

क्यों नहि सत्य सकों प्रण तोरि ।

धरा, धन, प्राण वहै सब जाहि.

मही करि दान कहूं किनि नाहि ॥१४॥

कियो ननु दीरघ बिष्णु प्रताप;

लिये पग द्वै वसुधा नभ नाप ।

तूर्ताप पुजावनको नृपराय;

दियो मुद सों निज जंग नपाय ॥१५॥

सुभक्त-प्रयत्न प्रसन्न रमेश;

निवास्त बताय रस्तातल-देश ।

क्यों, "सुनि दानि-शिरोनजि, तोहि"

मिलै घर 'पूरन' जो खचि होहि ॥१६॥

क्यों बलि भूप बढ़ाय हुलास;

"यही घर नांगत हौं सुखरास ।

प्रभात प्रभो ! मन धान पधारि;

तदा निज दर्शन देहु मुरारि" ॥१७॥

छल्यो बलिको नहि भूतल नाप;

छले बलिके घर सों प्रभु आप ।

तदा जय 'पूरन' विश्व नहेंद्र,

तदाजय भक्त भविष्य-सुरेन्द्र ॥१८॥

## प्रश्न

- ( १ ) भगवान् के इस अवतारका नाम 'वायन' क्यों पड़ा ? इस में  
सबकी भावश्यकता क्यों पड़ी ?
- ( २ ) वामन और बहिकी बातचीत गद्यमें लिखो । इस बातचीत  
तुम किसे समझते हो कि वह जो कहता था बड़ी उम्मा  
आन्तरिक भावार्थ था ? क्यों ?
- ( ३ ) शुकदाचार्यने बहिकों क्यों और किस शब्दोंमें दान देने से मन  
किया ?
- ( ४ ) विष्णुके लिए प्रयुक्त जितने शब्द इस पाठमें आये हैं उन्हें छोटे  
( ५ ) दोष, प्रसीध, अनुप्रास, अलंकार और अतीतिके विरोधी-अर्थपूर्ण  
( विरोध ) शब्द लिखो ।



बहुत बड़ा ही है। गाड़ी यात्रियोंको लेकर जब पहाड़ पर चढ़ती है, तब नीचेसे देखनेपर बड़ाही मनोहर दृश्य मान्यम पड़ता है। पहाड़ पर क्रमानुसार ऊँचे रास्ते बनाकर उनके ऊपर सेल पैदाकर गाड़ी चढ़ानेका जो प्रयत्न किया गया है, उसे देन आश्चर्य होता है। धन्य धर्मप्रेतोंका बुद्धि-कौशल, बलिदान है इनकी इन्जीनियरिंग-शिक्षा की।

हमलोग गाड़ीमें सवार होकर हिमालयपर चढ़ने लगे। गर्माप चढ़नेपर पर्यटकों गोमा धर्मप्रेत मनोरंजक और मनो-मुग्धकारिणी प्रस्तुत होने लगी। कहीं लताओंमें लिपटे हुए वृक्ष लगे हैं, कहीं फूलें गगन चुम्बती पर्यटन शिखरमें उछलने-पूले दृश्यें मिलाना मिलने हैं, कहीं सुके-दबाइयोंका समूह काँच मालाको घेर लेता है। हमलोग जितना ही ऊपर चढ़ते जाते हैं उतना ही नीचेका भाग धूपसे दिखलाई पड़ता था। नीचे की ओरकी पहाड़ी चोटीके समान मान्यम होने लगी। बागोंके वन-मण्डलोंमें धाँधलाहिल भूमिमें मान्यम होने लगे।

हमें नये दार्जिलिंगकी गोमा बड़ी सुन्दर मान्यम होनी की। विभिन्न रंग और विविध आकारके मकान बंगलाके प्रमाण-मय से दृष्टि गोमर होने लगे। बागोंके बाना बगीचोंके नये नये वृक्ष वन वन मान्यम मान्यम होने लगे। बगीचे गुलाबोंके फूलोंके लालन मालुन और चोटी-चोटीके गुलाब की-के मान्यम पड़ने लगे। मकान बगीचे वन-मण्डलोंमें लिपे जाते और कहीं से-मुक से-मुक वन-मण्डलोंमें लिपे जाते लगे।









है। यहाँकी जल वायुमें शैत्य है, इर्मात्रिय दार्जिलिंग बंगाल सरकारका प्रथम नाम निदिष्ट हुआ है।

सन १८३५ ई० के पूर्व दार्जिलिंग मित्रम राज्यके अधिकांशमें था। उर्मा माल राजने अंगरेजोंके स्वाभ्य-सुधारके निमित्त रहनेके लिय दार्जिलिंग दे दिया। इस समय यह राजशाही विभागके अन्तर्गत है। यहाँ डीवानी और फौजदारी अदालतें हैं। पुलिस कर्मचारियोंका मख्या भी अल्प नहीं है। दार्जिलिंग इस समय पूर्णरूपमें नगर हो गया है। यहाँ साहेबोंका स्कूल है, गिरजा घर और होटल हैं। साहेबोंके लिय इडेन मेनिटोरियम और गवर्नमेंट शीय लोकाके लिय लुई लुफिली मेनिटोरियम नामक दो स्वाभ्यावास गृह हैं। दोनों स्थानोंमें दो तीन रुपये प्रतिदिन देनेमें सुगम व्यवस्था पूर्वक रहा जा सकता है।

शिवपुर-बोटानिकल गार्डनकी तरह दार्जिलिंग नगरमें भी एक उद्भिद्-विद्या-नृत्य-शिक्षाका उद्यान है। यहाँ नाना प्रकारके फूलके पौधे काँचके बर्तनोंमें सुरक्षित हैं। शत्रुमें यह उद्यान पौधे नष्ट न हो जायें, इर्मात्रिय कानके घर बनाई गया है। इस उद्यानके भीतर एक छोटा-सा जलकुण्ड है। इस जलकुण्ड जानोय पक्षियों और सर्पोंकी देहे बल पुरा है। दार्जिलिंगके मान-मन्दिरके नामसे जो शैल प्रख्यात है। यह शृङ्गेरे पर्वतकी तरह अनेक शिखर दृष्टि गोचर में है। पर्वतकी दो चूड़ार्थ २०००० से लेकर २५००० फुट तक है।



है। गहरी जड़ वागुमें शीघ्र है, इतिहास दार्जिलिंग घमास सम्भारका घोरम वाग निर्दिष्ट हुआ है।

सन् १८३० ई० के पूर्व दार्जिलिंग गिराज-राज्यके अधि-  
कारमें था। उर्मी माल राजाने भंगरेजोंके स्थापत्य-सुधारके  
निमित्त रहनेके लिए दार्जिलिंग दे दिया। इस समय यह  
राजगोहा विभागके भागमें है। यहाँ खेतीकी और फ़ीसदारी  
धरातल है। गुलिय कामेनागियोंकी संख्या भी घट गयी है।  
दार्जिलिंग इस समय पूर्णरूपमें नगर हो गया है। यहाँ सादे-रो-  
का स्कूल है, गिरजा घर और हॉटल है। सादे-रोके लिए  
इसेन मेनिटोरियम और लन्दन शीघ्र छात्रोंके लिए लुई सुविधा  
मेनिटोरियम नामक दो स्थापत्यालय बने हैं। डीपोक स्थानोंमें  
दो तीन शरण प्रतिदिन देशी मुल व्यवस्थापना पूर्णक रहा  
जा सकता है।

जिसपुर-बोटाजिबल गाँवकी तरह दार्जिलिंग भागमें भी  
एक उद्भिद विद्या-लय जिसका उद्भव है। यहाँ मात्रा प्रकाशके  
पुस्तकें पाँचे कोयों बनेनेमें सुगम है। शीघ्रमें यहाँ पदमेर  
पाँचे मनु न हो जाय, इतिहास, कोयों या यत्नाय जाय है।  
इस उद्भवके भीतर एक छोटा-सा मन्दिर है। यहाँ विभिन्न  
जातिय दार्जिलों और मनीषी दे? यत्र-पूर्वक स्थित है।  
दार्जिलिंगके मात्र मनीषके नाममें जो शीघ्र सम्पाद है, उक्त  
मन्त्रमें लक्ष्मणकी तरह अनेक जिम्मा दृष्टि मोग्य होते हैं।  
लक्ष्मण दे मन्दिर, २३३३३ की देवा २०३३३ मन्दिर देवी















पृथ्वीपर जितनी वर्णमालाएँ प्रचलित हैं उनको साथ-साथ तीन ध्वनियोंमें रखता जा सकता है गान-देशीय, फ़िनिशिय और भारतीय। गान और आपान प्रभृति देशोंमें उन वर्णमालाओंका प्रचलन है, उन्हें गान-देशीय वर्णमाला कहते हैं। यद्वा, मुसलमान तथा यूरोपीय जानियोंकी भाषा उन वर्णमालाओंमें लिखी जाती है, उन्हें फ़िनिशिय वर्णमाला कहते हैं। भारतवर्ष, पूर्व-उपहाय, तिब्बत, लंका, पालीद्वीप आदि स्थानोंमें भारतवर्षीय वर्णमाला प्रचलित है। इन वर्णमालाओंमें भारतवर्षीय वर्णमालाके निर्माणमें जिस प्रकार की शुद्ध वैज्ञानिकता है, अन्य दो ध्वनियोंकी वर्णमालाओंमें उसका जितना अभाव है।

भारतीय भाषोंकी कल्पनाशक्ति और कवित्व-शक्तिने उनके साहित्यमें अपूर्व विकास पाया है। ऋग्वेद भारतीय साहित्यका सबसे पुराना ग्रन्थ है। अनेकोंके मतसे इसे संसारका सबसे पुराना ग्रन्थ कहनेमें कोई अत्युक्ति नहीं। रामायण और महाभारतके समान इतना बड़ा महाकाव्य संसारकी किसी भी भाषामें नहीं है। केवल यद्वाही नहीं काव्यकलाकी दृष्टिसे भी ये दोनों ग्रन्थ संसारमें सर्व श्रेष्ठ समझे जाते हैं।

भारतीय भाषोंकी सुर्लक्ष्ण प्रतिभा केवल काव्य और साहित्य-रचनामें ही समाप्त नहीं हुई थी, ज्ञान-विज्ञानकी अन्यान्य शाखाओंमें भी उनके कृतित्व प्रस्तुत हो उठे थे। यज्ञोंमें नाना प्रकारकी चेड़ियाँ बनाते समय आर्य ऋषियोंने ज्यामिति-

विद्या ( रेखागणित ) के सूत्रोंका आविष्कार किया था । इस समय मध्य संसारमें नौ अंको और शून्यकी सहायतासे संख्या लिखनेकी जो प्रणाली प्रचलित है, उसके आविष्कारक भी भारतीय मनीषी हो थे । अंकगणितको—जोड़, घटाव, गुणा और भाग करनेकी—प्रणालीका आविष्कार भी आर्य ऋषियोंनेही किया था । भारतवर्षनेही सर्व प्रथम संसारको बीजगणितकी शिक्षा दी थी । भारतीय पण्डितोंसे सर्व प्रथम महम्मद बिन मुहम्मद बीजगणितकी शिक्षा लेकर अरब नियासियोंमें उसका प्रचार किया । अरबियोंसे यह क्रमशः नाना स्थानोंमें फैला । बीजगणितको अंगरेजीमें 'अल्जब्रा' कहते हैं । अरबीके 'एल-जिब्रा' शब्दमें ही अंगरेजीके 'अल्जब्रा' शब्दकी उत्पत्ति हुई है । त्रिकोणमिति शास्त्रमें भी भारतीय आर्योंकी असाधारण व्युत्पत्ति थी ।

ग्रैकोलिय-शास्त्रका सर्वप्रथम आविष्कार भारतीयोंने किया । विषुव-वृत्तान्त समस्त तन्त्र और ग्रहणके प्रवृत्त कारण का एक भारतीय आर्योंने ही लगाया । अनेक लोगोंकी धारणा है कि यूरोपियनोंने ही सबसे पहले इस धानका आविष्कार किया कि "पृथ्वी अपने कक्षपर सूर्यकी चारों ओर घूमती है" किन्तु यह उनका भ्रम है । यूरोपनियामियोंके आविष्कारके बहुत वर्ष पहले भारतीय इन समस्त विषयोंमें अवगत थे ।

विक्रिस्ता शास्त्रमें भारतीयोंकी निपुणता कम नहीं थी । वे नूत मच्छी तरह भ्रम-विक्रिस्ता करना जानते थे । शक





## २७—बाल-भावना

( ले०—सूरदास )

मेक-परिवर—सूरदासजीका जन्म आगरा-मधुराकी सड़कर हन-  
 रमें संवत् १५४० में हुआ। ये सारस्वत ब्राह्मण थे। पिताका  
 नामदान था। गऊवाटपर ये महा प्रभु बलनावादीके शरणापन्न हुए।  
 श्रुतीके आशानुसार इन्होंने धीमतागवतके आधारपर 'सूर-सागर'  
 नामक बृहद् ग्रन्थ रचनाया। इसमें सवालाख पद हैं, पर मिलने हैं  
 ३५ हजार हैं। बलनावासीजीके पुत्र गुप्तार्जुन सिंहनाथजीने इन्हें  
 'सूर' नामक स्थान दिया जो सर्पया सार्थक है। ये जन्मान्ध  
 थे, पीछे अन्धे हो गये थे। सूरदासजी हिन्दी-साहित्यके बालमीकि  
 हैं। इन्होंने विन रसको उद्याप, उने पगकाणको पहुँचा दिया।  
 तो तो इनका बेजोड़ है। उरनाएँ अनुडी और भाव साम्नीर्ष  
 हैं। प्रत्येक शब्द अद्भुत रसमें दबा हुआ है। बाल्यमें, सूर-  
 दासजीका साहित्य-गानके मूर्त हैं। इनका गोलोदयाम संवत्  
 में पागमोली पौषमें हुआ।

पद

( १ )

गोमित कर नयनीत लिये ।

र चन्दन रेनुतन मंडित, मुगमें लेप किये ॥

नपीत लोच लोचन छदि, गोरोचनको निगक दिये ।

नयन मालों मल मधुपगन मधुरी मधुर पिये ॥



( ४ )

नैसा, मोरी कयहिं यदुंगी छोटी ।

तेनां दार मोहि दूध पिबत भई, यह अजह है छोटी ॥

दूजो कहति बलकी येनी ज्यों, है है लाँवा मोटी ।

काढ़ति गुहति न्हायति ओछति, नागिनीसी भ्यै लोटी ॥

चावो दूध पियायति पचि-पचि, देत न माखन रोटी ॥

रुखाम चिर जाँवी दोड भैया, हरि हलधरकी जोटी ॥

प्रश्न

( १ ) नीचे लिखे शब्दोंके अर्थ बताओ :—

घुदुलन, रंगै, कनियाँ, दधिदनियाँ,

( २ ) बालकपनका वर्णन अपनी भाषामें करो ।

( ३ ) बरोदाजीकी क्या अभिलाषा थी ?

( ४ ) होखरें और चौधे पदोंकर भावार्थ बताओ ।

— — —





देकर होता। पाण्ड्याप्रभारों में से बड़े उपहारों थे। मर्त तक  
ने इस दर शीत शीत तक बरकरा दौड़ते ही मर्त मर्त।

मानेनुके हिन्दी, पाण्ड्या और अङ्ग्रेजोंके प्रथम शिक्षक  
जहाँ से ईश्वरदास सिवारी, मौलवी साजधारी और बाबू  
देविजोष थे। राजा शिवप्रसाद सिवारी हिन्दूके मरानपर  
रह चुका था। उसमें भी कुछ हिन्दूतक इन्होंने पढ़ा था।  
निश्चय से राजा साहबजी भी गुरुगुरु मानते थे। इन्होंने  
कुछ दिन बनारसके श्रीम कालेजमें भी शिक्षा पायी थी। पढ़नेमें  
इन्होंने बर्ना मत नहीं लगाया था, परन्तु फिर भी अपनी बुद्धि-  
की तीव्रतासे वे अपने सप सप्त-पाठियोंमें धृष्ट परीक्षा देकर  
अन्यत्रको आश्चर्यमें डालते थे। ११ वर्षकी अवस्थामें  
इन्होंने पढ़ना छोड़कर सकुटुम्भ जगन्नाथजीकी यात्रा की। इन्होंने  
कर्नाट, बंगाल, गुजराती, मारवाड़ी आदि अनेक भाषाएँ समय  
समयपर स्वयं सीखलीं। इनके काव्य-गुरु पं० लोकनाथ थे।

इनकी जीवन-यात्राकी प्रायः सभी बातोंका निचोड़ जिन्दा  
हिन्दी है और यह इनके सभी पाठ्योंसे प्रकट होती है। यह  
गहरा अच्छा खेलते थे। गाने पढ़ानेका शौक रखते थे, और  
बुद्धि भी कई पाजे बजाते थे। फूतुर उड़ानेका व्यसन था।  
गाना भी खेलते थे। हुजूम, चिड़िया, ईंट और पानके स्थानपर  
इन्होंने शंख, चक्र, गदा और पद्म नाम रखे थे। इसी प्रकार  
हिन्दी, पादशाहकी जगह देवी-देवताओंके रूप रखे थे। बुद्धि-  
गल्ले में लेने आप बड़ा उत्सव करते थे। उद्धारता इतनी

यही-वही थी कि कवियों और पण्डितोंको हजारों रुपये दान  
 कर देते थे। जिसने इनकी कोई चीज़ पसन्द की, वह नुरत  
 उसकी नज़र हुई। दीप-मालिकामें इनके विराग जलाते थे,  
 और देहमें लगानेके लिए तो सदैव तेलके स्थानपर इतर ही बना  
 जाता था। सारांश यह कि रुपयेको पानीकी तरह बहाते थे।  
 इनकी यह दशा सुनकर महाराज काशी नरेशने एक दिन इनसे  
 कहा, “बबुआ ! घरकी देखकर काम करो।” इसपर इन्होंने  
 तुन्न उत्तर दिया, “हुजूर ! यह धन मेरे बहुतसे कुजुओंको  
 खा गया है, अब मैं भी इसको खा डालूंगा।” सं० १६२७ में  
 अपने छोटे भाईसे अलग हुए थे, और थोड़ेही वर्षोंमें  
 अपने हिस्सेकी समस्त पैतृक सम्पत्ति उड़ा डाली।  
 नतिहालकी कई लाख रुपयेकी—सम्पत्तिके ये  
 भाई उत्तराधिकारी थे। इनकी उड़ाऊ दशा  
 नानाने कुछ सम्पत्तिका हिषानामा इनके अनुजके  
 दिया। परन्तु बिना इनकी राजामन्दीके यह  
 ठीक न था। अपनी नानीके कहनेपर,  
 घर दिये और इस प्रकार अपने  
 देनेमें कुछ भी भागा पाछा न  
 दिया दिल आदमा कर सक  
 इनकी अधिक भी कि होलामे एक  
 काममें बांधकर कबीर गाने हुए  
 पहला अर्थ लको अगरेजी स०

गँके लिए कोई भूढ़ बोल सकता है। भारतेन्दु उस दिन कुछ न कुछ अवश्य करते थे। एक बार आपने नोटिस दिया कि नहराज विजया-नगरम्की कोठामें एक घूरपके विद्वान् सूर्य और चन्द्रमाको पृथ्वीपर उतारेंगे। हजारों मनुष्य वहाँपर एकत्र हुए, परन्तु कुछ न देखकर लज्जित हो वहाँसे लौट गये। एक बार प्रकाशित कर दिया कि बड़े-बड़े प्रतिष्ठित गायक हरिश्चन्द्र स्कूलमें मुफ्त गाना सुनावेंगे। जब हजारों आदमी एकत्र हुए, तब परदा खुला और एक मनुष्य चिट्ठापकके बस्त्र पहने उलट्य तानपुरा लिये घोर खर-स्वर करने लगा। यह देख लोग हँसते हुए शरमाकर लौट गये। एक बार इन्होंने एक मित्रसे नोटिस दिला दिया कि एक मैम रामनगरके पास खड़ाऊँ पर तयार होकर गंगाजीको पार करेगी और खड़ाऊँ न डूबेगी। हजारों लोग एकत्र हुए, किन्तु न वही मैम न खड़ाऊँ! पीछे तब समझ गये कि यह भी एक मजाक था। भारतेन्दुने सुन्दर कपड़े, खिलौने, फोंदो एवं अपूर्व पदार्थोंका संग्रह सदैव किया। इनको तस्वीरोंका संग्रह बहुत ही प्रिय था। इन्होंने बड़ा परिश्रम करके बहुतसे बाइबल्हों एवं अन्य महामत्स्योंकी तस्वीरें एकत्र की थीं, परन्तु एक हजरतने जाकर इनकी बड़ी प्रशंसा की और इन्हें अपनी आदतसे लावार होकर वह संग्रह उन्हें दे डालना पड़ा। इसी दानके पीछे लोगोंने इन्हें पहचानने देखा। फिर इन्होंने ५०७ तक धन्य करके वह संग्रह उन हजरतसे माँगना चाहा, परन्तु उन्होंने न दिया। इसके साथ

घेड़नेमें लोगोंका जी इतना प्रसन्न रहता था कि कभी चित्त ऊपता ही नहीं था । चाहे जितना शोक क्यों न हो, परन्तु इनके पास पहुँचे कि चित्त प्रकुलित हो गया । अपने स्वभावका इन्होंने म्यय' बढ़ाही बढ़िया एव' यथार्थ वर्णन किया है। यथा—

“नेयक गुनीजनके चाकर चतुरके है,  
कविके भीत चित हित गुन गानके ।

सीधेनमें सीधे, महा बाँके हम बाँकन सों,  
'हरिचन्द' नगद दमाद अभिमानके ।

बाहिरेकी बाह, बाहुरी न पद पर्याह,  
नेहके दियाने मदा गूत निमानके ।

मायम रसिकके, मुदाम-दास प्रेमिनके,  
सखा प्यारे कृष्णके गुलाम राधारानीके ।”

इस महाकविने केवल ३५ वर्ष इस संसारको सुशोभित किया और प्रायः १८ वर्षकी अवस्थासे काव्य रचना आरम्भ की। पहले ये केवल गद्य लिखने थे, पीछे पद्य भी लिखने लगे। इस १७ वर्षके अल्प कालमें इन्होंने ७० ग्रंथ बनाये। इनके द्वारा सम्पादित संगृहीत या उत्साह देकर बनवाये हुए और भी ग्रन्थ वर्तमान हैं। लङ्गकेश्वर बाँकीपुरमें इनके मुख्य-मुख्य ग्रन्थ ‘हरिचन्द कथा’ के नामसे ८ भागोंमें प्रकाशित हुए हैं। इस प्रकार भार्तेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रने साहित्यिक

मानन्दोंको भोगने हुए हिन्दी-साहित्य और हिन्दु-समाजकी सेवासे अपना नाम सदाके लिये संसारमें अमर कर दिया ।

( हिन्दी नवयुगसे संगृहीत )

### प्रश्न

- ( १ ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्रका जीवन-परिचय संक्षेपमें लिखो ।
- ( २ ) इनके बनाये हुए बिलन ग्रन्थ मिलते हैं ? यदि कुम्हने इनका बनाया हुआ कोई ग्रन्थ पढ़ा है तो उसका नाम बताओ ।
- ( ३ ) भारतेन्दुने अपने स्वभावका वर्णन जिस पद्यमें लिखा है, उसका अर्थ बताओ ।
- ( ४ ) 'नदके दिवाने' इस मुहावरका प्रयोग अपने वाक्यमें करो ।
- ( ५ ) इस पाठके प्रथम परिच्छेद में पाँच विनोद हैं और उनका पदपरिचय बताओ ।

## २९—कबीरके उपदेश

( ले०—महात्मा कबीरदास )

लेखक-परिचय—महात्मा कबीरदासका जीवन-काल अनुमानतः स० १४५५—१५०५ ई। से हिन्दू-कुलमें उत्पन्न हुए। परन्तु एक मुसलमान के घर पड़े। रामनामके भक्त और स्वामी रामानन्दके शिष्य थे। हिन्दू और मुसलमान दोनोंके ये पुरख थे। दोनोंके मतोंकी इन्हींमें कबीर भाषावचना की। इनके समान लगी बाल कदनेवाले कम लोग हुए हैं। इनके कदनेका रंग निगाला है। परन्तु इन्हींमें जो कुछ कहा है, अनुभवार्थ है। इनकी मालिखी गुरु भगदूर हैं। गुरु, मुलसी और मीराने सजनोंकी मीनि इनके भजन भी अव्यक्त लोकप्रिय और प्रचलित हैं। ये उच्च कौटिके कवि, समाज सुधारक और भगवद्भक्त थे।

कथिया आग टगाये, और न टगिये कोय ।  
 आग टगा मुख होन है, और टगे मुख होय ॥ १ ॥  
 ऐसी धानी बोलिये, मनका आग नोय ।  
 औरनको मीनल को, आगहु मीनल होय ॥ २ ॥  
 जगमें बेरी कोइ नहि, जो मन मीनल होय ।  
 या आगको हारि है, दया करे मन कोय ॥ ३ ॥  
 गारी ही मो जगजे, कलह, कष्ट और मीन ।  
 हारि मरे मो नापु है, छाति मरे मो नीय ॥ ४ ॥  
 न्हाये धोये का मया, जो मन मीन न जाय ।  
 मीन मदा ज्ये मरे, धोये बाम न जाय ॥ ५ ॥





( १ ) अथवा इति कब होती है ?

अथवा कब समाप्त होती ?

( २ ) लेखक कोइका भावार्थ समझाओ ।

( ३ ) लेखक कोइक और दोइक इतिहास उर्ल लिखो ।

— \* —

## ३०—उद्योग-धन्ये

( १ ) नाया कृष्ण भा समः १०

लेखक लिखत—भायका समझान कदमोंक, भायकुर है । वे विचार-  
उत्पन्न प्रसिद्ध दिग्गी लेखक और कला-कालेजक अर्ध-भायक का इति  
हासक १० प्रकाशनाई प्रोचन है । भाय कर्तरी मिलनान,  
प्रसंग और महान है । दिग्गी समझके कृष्णाने कर्त समझ इंगल की  
छव भायक सिद्ध दूर और उर्ल भायका इहायान हा लता । भाय  
मिलन अर्ध-भाय और भायकीतिर कर्त की प्रायिक प्रसंग लिख है ।

कृष्णने समझके भायक इंगल भायकीता प्रसंग लेख  
दिग्गी होता आया है । इस समय प्रसंग कृष्ण कर्त  
कृष्ण भाय की कर्त प्रसंग समझमान प्रसंग लता भा । कृष्ण  
भाय की कर्त लेख भाय की दिग्गी प्रसंगक कर्त लेख भाय  
प्रसंग भाय कर्त कर्त समझमान प्रसंग लिख होता  
भा । समझमान लेख कर्त कर्त समझ भाय कर्त भाय  
कृष्णने लिख कर्त समझमान—कर्त कर्त कर्त  
का कर्त कर्त कर्त भाय कर्त कर्त कर्त कर्त कर्त

जैसे निर्देशों का-कागजातों तथा देशी दुकानें चर्चों के  
कारण बालागो निर्देशों में हैं, तबसे इनके चर्चोंको पद कम  
होता है, शुद्धीका गोलगात्र घट जाता है। यह हालत और  
दुर्गते देशों में, पानी, पानी, पानी, सुनात शब्दादि - यों भी हुई  
है। अब दुकानें (पानीपानी) इनका घट नहीं करता। उन्हें  
यों तो घर घर छोड़ भूख पानी के जाता पड़ा है, या दुकानों  
पानी में नौकरी पानी पड़ा है, या गोलगात्र पानी पानीपानी  
मनुष्योंको धर्मोंमें मिल जाता पड़ा है। जहाँ ये लोग  
पुनर्देशों में लगे हुए हैं पानी उन्हें पानीपानी साथ-साथ सेती  
भी पानी पड़ा है। जिन्हें सौभाग्यसे पानी धर्मों मिल गयी  
है ये तो पूरे गोलगात्र इन गये हैं, और जिन्हें ऐसा सौभाग्य नहीं  
होता है उन्हें साधन-भाषोंमें शब्दा गोलगात्र सुदी पानीपर भोड़ा  
पुनर्भरता पुनर्भरता पानी पानीपानी पड़ा है, नहा तो उनकी भोड़ी  
पानीको उपजसे उनकी उदर-पुति नहीं है। सन्  
१९९१ पानी मनुष्य-जातियों रिपोर्टमें लिखा गया है कि देशी-  
निदेशों दुकानें पानीपानी सन्ने मालों, कारण पुनर्भरता व्यापारियोंका  
गोलगात्र होगया है, इसमें ये अपने धर्मोंको छोड़कर सेती  
पानी मालों पर रहे हैं। इसमें सेती पानीपानीकी संख्या  
पुनर्भरता जाती है, इसमें धर्मोंकी मांग है, और इसपर गोलगात्र भी  
पुनर्भरता जाता है।

एक और दूसरे सापसने भी धरतीकी मांग बढ़ रही है। धरतीसे सापसने जोड़नेकी इच्छा हर देशमें, हर जगहमें है, पर

यहाँ इनमें विशेषता है। यहाँ समाजमें जमींदारोंका बड़ा मान है। देशमें हर किसीकी इच्छा रहती है कि कुछ न कुछ भेरी करे। जहाँ कुछ संवय किया या अपने काममें छूटी ली कि भट्ट यही इच्छा होती है कि कुछ घर्नी लेकर भेरी—सादे जेरी भरी रीतिमें कोई न हो—करे। फिर पेना न करें तो और क्या करे। यहाँ पर अपनी कमाई—अपने मजिद फल को दूसरे दुगपर व्यवहारमें लानेके उपाय भी तो बहुत कम हैं। यहाँ देशमें रखा जमा करनेकी बाल विद्युत् नहीं है। यह लोगोंकी अब तक समझ नहीं है। नये व्यवसायोंपर भरोसा कम है, इनमें अपनी पूर्ती नहीं लगा सकते, इस कारण यहाँ घर्नीपर रखा लगाना ही सबसे अच्छा और बिना जोखिमका काम समझा जाता है।

अधिकतर लोग भेरीमें ही जति है, पर उसमें रीतिमें भेरी नहीं कर सकते। यदि दृष्टि हुई तो लगत हुई, नही तो मारी गयी। अब अकाल बढ़ता है नव भेरीवालोंको कोई उपाय नहीं सकता। इनके पास मजिद फल नहीं रहता कि दुर्जिदोंके दिनेमें ही किसी तरह दिन काटे। इसमें अकालमें इसी तरहका प्रारंभ है, वे सुनो मने लगते हैं जबसे रोजगार बंद गये तबसे अकालके कारण सब कुछ हाथमें नहीं रहता बहुत बड़ मारी है। यह देखकर दुर्जिद कर्मचारियों का मन ही कि लोगोंको रोजगार बालोंमें लगाना नहिं ही किसीको भेरीमें प्रविष्टा दिनें करके फल न दया।

बाहिर। यदि लोग रोजगार-धन्धे भी करने रहेंगे तो अफानसे  
 रचना बंद नहीं पहुँचेगा। यह स्वच्छाह बहुत अच्छी है। पर  
 रोजगारोंकी ओर जानेसे ही दुःख दूर न हो जायगा। मान-  
 लिया कि देशमें सुमिश्र पहुँचाया और खेतिहरोंको भूखे मरनेकी  
 नीयत आयी। उस समयमें दूसरे पेशेवालेकी भी हालत बुरी  
 हो जायगी। मिलों, पुतली घरोंको भी काम बन्द करना  
 पड़ेगा। कामसे काम काम करना पड़ेगा, क्योंकि जय खेति-  
 हरोंको खानेको ही नहीं मिलेगा तब पुतली घरोंकी चीजें कौन  
 खरीदेगा? कारखानोंके माल योंही रखते रह जायगे। जय  
 खेतीमें जूट, कपासकी बर्बाद होगी तो पुतली घरोंमें कच्चे माल  
 कहाँसे आवेंगे? इसलिए कहा जाता है कि सिर्फ रोजगारोंमें  
 लग जानेसे ही दुःख दूरिद्रता दूर नहीं होगी। साथ ही साथ  
 खेतीकी भी उन्नति करनी पड़ेगी। नये बाँजारोंसे नया  
 रोजगार खेत जोतकर, खाद डालकर, पानी पटाकर खेतीकी  
 तरफकी करनी पड़ेगी। इससे दो लाभ होंगे, एक तो इन  
 बाँजारोंकी माँग बढ़ जायगी जिससे देशमें इनके लिए बहुतसे  
 कारखाने खुल पड़ेंगे और दूसरा यह कि उपज बढ़ जानेसे खेति-  
 हरोंके खाने पीनेके अतिरिक्त अन्य आवश्यक वस्तुओंको मोल  
 लेनेके लिए पर्याप्त धन बच जायगा। इस धनसे वे लोग कपड़े-  
 लते, जूते, छाते इत्यादि सामान खरीद सकेंगे। इससे भी  
 उपयोग-धन्धोंके फैलनेमें बड़ी सुगमता होगी। उपज आजसे  
 घनी होजाय तो कपड़े-लते, जूते, छाते, इत्यादि आवश्यक

घस्तुओंकी माँग चाँगुनीसे भी अधिक होजाय । कारण यह है कि उपज दूनी होनेसे भी किसान खाने पीनेमें चावल, आटा-दालमें जितना पहले खर्च करता था, उतना या उससे कुछ है अधिक खर्च करेगा । उपज दूनी होनेसे उसका पेट तो दून नहीं हो सकता । इसलिए जो उसकी बचत होगी वह कपड़े लत्तेकी-सी जम्दारी चीजोंमें लग जायगी । इससे इनकी खप-बहुत बढ़ जायगी और यदि किसान लोग अपने मालको थोड़ा बहुत तैयार करना सीखें, यदि धानके बदले चावल, गेहूँ के बदले आटा बेचना शुरू करें तो औजारोंकी माँग और भी बढ़ जायगी । औद्योगिक कमीशनने हिसाब लगाकर देखा है कि यदि देशमें कलोंसे पानी पड़ाने और ईख पेनेकी चाल चल जाय तो सिर्फ इन्हीं दो मदोंमें ८० करोड़ रुपयोंकी पूँजीके कल-सुं लग जायेंगे । फिर इनमें सालाना मरम्मतके लिए भी खर्च लगेगा । इस तरह आप देख सकते हैं कि खेतीकी तरफ़ करनेसे धनर्धन बढ़ जानेका कितना बड़ा मौका है । लोगोंको केवल रोजगारमें ही भेड़नेसे काम न चलेगा । साथ ही साथ खेतीकी उपज बढ़ानी होगी ।

खेतीकी उपज बढ़ाई जा सकती है । दूसरे देशमें परिश्रम करके औजारोंकी सहायतासे अधिक अन्न उपजाया जाता है, इसको औद्योगिक कमीशनने दर्शाया है । उसने लिखा है कि भारतवर्ष और इंग्लैंड दोनों जगहोंमें गेहूँ और जव बोये जाते हैं, पर जहाँ इंग्लैंडमें एकड़ पीछे १११६ पाउण्ड ( वजन )

होता है यहाँ भाग्यमें सिर्फ ८७५ पाइण्ड ! जहाँ भाग्यमें  
 ४ पौण्ड १० पाइण्ड पानी हुए हैं वहाँ होता है यहाँ अमेरिकाके  
 एक गाँवमें २०० और भित्तमें ४०० । जब इस प्रकार  
 जहाँमें उपज बढ़ाई जाती है तब भाग्यमें उन्हीं उपायोंको  
 जल्दी लाकर उपज क्यों नहीं बढ़ाई जा सकती है ?

मार्शल यह है कि भाग्यरत्न हथियारोंका देना है, जहाँ सैकड़ों  
 सौ ४२ आदर्मी हथियारोंमें परीक्षा या अपरीक्षा रूपसे लगे हुए  
 हैं। यहाँ कम बाख्खानोंकी बात तो मत पढ़ी है, पर तो भी  
 हथियारोंकी प्रधानता है। ब्रिटिश भारतकी जितनी धरती  
 जहाँमें दोहरे जा सकती है और जहाँमें दोहरे जा रही है, वह कुछ  
 क्षेत्र पल्लवा प्रति सैकड़ों ६३ भाग है। इससे ४४ सैकड़ों हिस्सा-  
 में किसी तरह जहाँमें दोहरे जा रही है, वहाँ वहाँ ५६ सैकड़ों के  
 हिस्सासे भी आकार हो चुका है। यदि सम्पूर्ण ब्रिटिश  
 भारत और धर्मोंका हिस्सा लगाया जाय तो तिरु सैकड़ों पीछे  
 १६ और ऐसी जमीन मिलेगी जो किसी तरह सेती घाटीके  
 काममें लायी जा सकती है। किन्तु इसका अधिकांश धर्मों  
 ही है। हमसे स्पष्ट है कि सेती पड़ानेकी गुंजायश कम  
 है। नये-नये उपायोंसे सम्भव है कि वहाँ वहाँ पर उपज  
 बढ़े, पर साथ श्रुतियोंकी स्पष्टता भी तो बढ़ रही है।

सेती उसके रस्ते और उपजकी तो यह हालत है। उधर  
 सेती पर भरोसा करनेवाले, उनकी उपजसे पटनेवाले मनुष्यों-  
 की संख्या पर ध्यान दीजिये। तुंग, मलेरिया, हैजा, इन्फ्लुएंजा

भीर भकालके रहते हुए भी जन संख्या बढ़ रही है। जाने-  
वालोंकी जितनी वृद्धि होती है, उतनी वृद्धि मये नेतों भी  
उमकी उमजमें नहीं होती। इस कारण साध पदार्थ बाहरमें  
मँगाने पड़ते हैं।

कलेंकि बने अच्छे मालके सन्ने पड़नेके कारण हाथोंके  
बने अच्छे मालको कोई नहीं पूछता। इसमें देशी पैसोंके  
मरीज होगये हैं। उन्होंने या तो पेशा छोड़कर रोजाना मजदूरी  
करना और कलेंमें काम करना शुरू कर दिया है, या ये नेतों  
का दिन काटने लगे हैं। इसमें भी नेतों करनेवालोंकी संख्या  
बढ़ रही है।

देशमें उच्चम सुशिक्षित पैसोंका स्वरुप प्रचार न होनेके कारण  
भीर मये व्यवसायोंपर भरोसा न कर सकनेके कारण भी  
लोगोंको अपनी नूँजी नेतीमें लगानी पड़ती है। इसमें मात्र-  
कल उमजमें ज्यादा लोग नेती बारीमें लगे हुए हैं।

इसमें छुटकारा पानेके दो उपाय हैं। एक तो उमज बढ़ा-  
नेका प्रयत्न करना और दूसरे लोगोंका घरोंमें लगाना। दोनों  
एक साथ ही, नहीं तो पूरा फल नहीं मिलेगा। नेतोंकी प्र-  
ख्या सुशिक्षितों के लिए मये भीजाने, मये भाविज्जानेमें सहायक  
होना पड़ेगी। संविधानोंका मान्य सेवा करने, आटा रूममें  
जैसे सहायक उपाय घरोंमें लगा देना होगा। माल्दे  
हकदारोंको देशकी माल्देकी रक्षा करने हुए विशेष  
हकदारोंमें विशेष कर जमानेमें जीते हुए धनिकर उपायों





## ३१—गिरिधरकी फुगडुलिया

( ले० गिरिधर-कविनाथ )

बसक-परिचय—गिरिधर कविनाथकी जीवनी अभी तक प्रकाशित नहीं है। इसकी आकाशित पुस्तकियाँमें अनुभवकी बात नहीं हुई है। वसन १९२० में इसका अन्तर्गत हुआ माना जाता है।

( १ )

दीपक नाथ न कीर्तिये, गानेमें भजिमान ।  
 भक्तन त्रोट दिन मारिफाँ, डाँटे न मरन निदान ॥  
 डाँटे न मरन निदान, तियन जगमें जग लीले ।  
 मोटे कमल सुनाय, गिरन मय ही की कीले ॥  
 कह गिरिधर कविनाथ, जैसे यह सब यह मीठन ।  
 गानुन तिमि दिन मारि, मरन मरनहीकी दीपन ॥

( २ )

साह सब गानागाने, मरनमरन टलान ।  
 इस मरन गिरन मीठी, मरन मरन मारि वार ॥  
 मरन मरन मारि वार, मरन मरन ही मरन डोरे ।  
 गिरन मरन न मरन, मरन मरनमें कहि कोरे ॥  
 कह गिरिधर कविनाथ जगन यदि दिना मरि ।  
 मरन मरन ही मरन, मरन निदान कीट मरि ॥

( ३ )

मरनमें सब मरन है मरन मरनही मरन  
 मरन मरन मरन मरन मरन मरनही मरन ॥

तहाँ दवावै अंग, भयति कुता कहँ नारै ।  
 दुस्मन दावागोर होय, तितहँ को मारै ॥  
 कह गिरिधर कविराय, सुनो हो धुरके पाठी ।  
 सर हथियारन छाँडि, हाथ मँह लोनी ल्योनी ॥

( ४ )

पिना दिवारे जो करै, सो पाँछे पछताय ।  
 कान दिवारे आपनो, जगनँ होत ईताय ॥  
 जगनँ होत ईताय, चितनँ चैन न पावै ।  
 खान पात लननान, राग रंग मनहि न भावै ॥  
 कह गिरिधर कविराय, दुख कष्ट दस्त न दारै ।  
 लज्जत है दिय नाँहि, कियो जो पिना दिवारे ॥

प्रश्न

- ( १ ) गिरिधर कहने वाले मनुष्योंको क्या दर्शन दिये हैं ?
- ( २ ) अच्छे मित्रको क्या गृहदात है ?
- ( ३ ) लज्जते क्या-क्या फायदे हैं ?
- ( ४ ) पिना दिवारे कान कानों क्या-क्या फायदे हैं ?
- ( ५ ) कौनसे लिये चीजें सर मर्दानोंका पद-निर्वाह बढ़ाते हैं —  
 मनाई नर संतारने नालयका व्यवहार । ”

# ३२—काटियावाड़

( जे. बी.सी. विभागकी परिधि )

- १. काटियावाड़ नामकी विभागकी परिधिमें प्रमुखतः दो प्रकार की जमीन मिलती है । आधे भागकी जमीन खेती के लिये उपयुक्त है ।
- २. बाक़ी आधे भागकी जमीन वन और चरागाह के लिये उपयुक्त है ।
- ३. काटियावाड़ में बहुत सी नदियाँ हैं । इनमें से प्रमुख नदियाँ हैं—
- ४. साबरमती नदी ।
- ५. नर्मदा नदी ।
- ६. काटियावाड़ में बहुत सी नदियाँ हैं । इनमें से प्रमुख नदियाँ हैं—
- ७. साबरमती नदी ।
- ८. नर्मदा नदी ।
- ९. काटियावाड़ में बहुत सी नदियाँ हैं । इनमें से प्रमुख नदियाँ हैं—
- १०. साबरमती नदी ।
- ११. नर्मदा नदी ।
- १२. काटियावाड़ में बहुत सी नदियाँ हैं । इनमें से प्रमुख नदियाँ हैं—
- १३. साबरमती नदी ।
- १४. नर्मदा नदी ।
- १५. काटियावाड़ में बहुत सी नदियाँ हैं । इनमें से प्रमुख नदियाँ हैं—
- १६. साबरमती नदी ।
- १७. नर्मदा नदी ।
- १८. काटियावाड़ में बहुत सी नदियाँ हैं । इनमें से प्रमुख नदियाँ हैं—
- १९. साबरमती नदी ।
- २०. नर्मदा नदी ।

है। जन्माजी, गोरखनाथ और गुरु दत्तात्रय, ये तीन हिन्दू-मन्दिर हैं। गिरनारके शिखरके ऊपर सबसे ऊँचा मन्दिर गुरु दत्तात्रयका है, जहाँ उनकी पादुका बनी हुई है—कोई मूर्ति इस मन्दिरमें नहीं है।

जुनागढ़के शहरके ऊपर एक गढ़ है, जो ऊपर कोट कहलाता है। वहाँ राजा रायबंगार और उनकी रानी राजक-देवीका मन्दिर है, जो बारह सौ साल पहलेकी इमारत है। ऊपर कोटकी दीवारें, दरवाजे और गोपुर भी उनी समयके हैं और बहुत ही सुन्दर हैं।

गिरनारकी चढ़ाईके लिए लोगोंने खन्दा जमाकरके पत्थरके झोले बनवाये हैं। गुरु दत्तात्रयके शिखर तक ६६६० जंजे बढ़ने पड़ते हैं। नरती मेहता जो पश्चिमी भारतके बड़े सन्त हो गये हैं, जुनागढ़के ही रहने वाले थे। गिरनार पराईके पत्थर पर एक दामोदर-कुण्ड है। वहाँकी मिट्टि, माड़ी और पानीका द्रव्य बहुत ही चित्ताकर्षक है। इस कुण्डमें मेहताजी स्नान करते थे। उनकी जीवनीकी एक सारत कहानी यह है कि नगर ब्रह्मचर्य होते हुए भी उन्होंने अल्पवयसे धर्म जाकर हरिकोर्तनका उत्सव मनाया था।

काठियावाड़ हमर भूमि कहलाता है। श्रीहनुमान्की राक्ष-पत्नी हारका और सोलनरथ, जहाँ सोलनरथजीका मन्दिर है और जहाँ भगवान् हुन्ने देहत्याग किया था—ये सब स्थान

काठियावाड़में ही है। काठियावाड़ नृत्य और गायनका देश है और यहाँकी स्त्रियाँ अनेक प्रकारके सुन्दर नृत्य करती हैं। यहाँके "गान्धा" और "गम" प्रसिद्ध हैं। परन्तु इनके अलावा और बहुत प्रकारके नृत्य हैं। जैमे पुरुषोंका नृत्य जो यहाँके कारनकार बहुत गौरवमें मानते हैं। काठियावाड़की स्त्रियाँ बहुत कपनगी मानी जाती हैं और इनका पहरावा जो लेंहवा और ओढ़नी है, बहुत सुन्दर होता है।

काठियावाड़में कई तीर्थस्थान हैं। इनमेंमें दो स्थान बड़े माने जाते हैं—एक प्राची और दूसरा गुडामापुरी तिमरा आधुनिक नाम पोर बन्दर है और जहाँ गुडामाजीका एक बहुत पुराना मन्दिर है। पुराने मन्दिर और भी कई हैं, जिनमेंमें एक बेरावलमें है, जो छटी गरीमें अगवोंके और इन जहाँजोंके लिए दीपस्तम्भका काम दे रहा है।

गोहिलवाड-प्रान्तमें शत्रुजयका प्रसिद्ध पहाड़ है, जिनके ऊपर जैनोंके बहुत सुन्दर मन्दिर हैं। यह जैन-यात्रियोंका बहुत बड़ा तीर्थ है और हर साल गैकड़ों लोग यहाँ जाते हैं।

काठियावाड़ अपने अच्छे घोंदोंके लिये बहुत उन्नत गणों और बैलोंके लिए बड़ा मशहूर है। गारे जमिया भागें काठियावाड़ हो एक देश है जहाँ निंद जंगलमें पाया जाता है। को. रीय जंगलोंका पहाड़ यह जंगल था कि अजिंकवा निर काठियावाड़में अजिंकवा छोड़ दिया गया है। परन्तु हिन्दुस्तानमें

पुराने जमानेमें कई जगहोंपर सिंह थे और मुगलोंके समयमें जहांगीर बादशाहने अपनी तबारीखमें लिखा है कि दिल्लीसे लाहौर जाते हुए वे सिंहका शिकार खेलते थे और उस समयके विश्वमें शेर और सिंह दोनोंका शिकार दिखाया गया है। काठियावाड़का सिंह जंगलमें रहता है और अफ्रिकाका सिंह उजाड़में रहता है—पेड़ोंके जंगलमें नहीं। दोनों जानवर बिलकुल निराले हैं जैसे हिन्दुस्तानका हाथी अफ्रिकाके हाथीसे भिन्न है—आश्चर्यकी बात यह है कि संस्कृत शब्द सिंह और अफ्रिकन शब्द सिंहवा कुछ एक-से मालूम देने हैं।

काठियावाड़के लोग प्राचीन कालमें मशहूर व्यापारी हैं। अफ्रिकाका देश इन्होंने सदियोंसे आयाद किया है और जाया दीपतक व्यापार करते रहे हैं। पहले योरोपीय यात्री—वासको डिगामार्की काठियावाड़के लोगोंसे आशा अन्तरीपके पास भेंट हुए थी और उनके दिखाये हुए रास्तेमें चलकर वह सूतकी ओर आ रहा था, परन्तु तूफानकी वजहसे उसके जहाज़ दक्षिणको घट गये और वह कालीकट पहुँच गया।

काठियावाड़में कई मशहूर व्यक्तियोंका जन्म हुआ है। आधुनिक कालमें स्वामी दयानंद सरस्वती और महात्मा गांधी यहाँ पैदा हुए। स्वामी दयानंदजीने मोरिया-रियासत (हल्लाखानके) छोटेसे गांध टंकारमें जन्म लिया था। महात्माजीका जन्मस्थान सुदामपुरी है, परन्तु उनकी बाल्यावस्था और सौदना-

वस्था राजकोटमें ध्यानीत हुई, जिस नगरके राजाके उसके पिता प्रधान मंत्री थे ।

### प्रश्न

( १ ) काठियावाड़ का पुराना नाम बताओ । काठियावाड़ नाम कब और किसने रक्खा ?

( २ ) सोरठका शुद्ध रूप क्या है ?

( ३ ) आज कल सोरठ किमके अधिकार में है ?

( ४ ) काठियावाड़ किन-किन बातोंके लिए प्रसिद्ध है ?

( ५ ) नारसी मेहताके विषयमें क्या जानने हो ?

( ६ ) उदयमा पुरीका आधुनिक नाम बताओ ।

( ७ ) “काठियावाड़की वित्तवृत्ता” विषयपर एक छोटा निबन्ध लिखो

## ३३—देवताओंका पौसला

( १ )

प्रातः काल महाराज उठा, और उसमे भाशा दी कि दामाजीके मिथुकोंको सम्मानसे हमारे सामने पेश किया जाय ।

उस रात उसने एक अनुपम स्वप्ना देखा था और उसकी याद बर्ती तक उसकी आँखोंमें बसता रही थी । इसलिए उसने उन मिथुकोंको कृपा-दृष्टिसे देखा, और उनकी तरफ़ एक-एक सोनेकी एक एक सी मोहरें दान दीं । रात के आखिरी जग जग कार होने लगा ।

( ५ )

उसी शहरमें एक गरीब किसान बसता था, जिसे दिन रातके परिश्रमके बाद थकाने लाने पीनेका ही काम होता था ।

दोपहरके समय किसानने अपनी कतरीया कहा "मोरा भाई मर गया है । अब तुम्हारे आताथ गल्लेकी भी नहीं पाएगा होगा ।"

"मगर" किसानकी कतरीया कहा "मर गया है । भी पशुन तंगीसे लोनी स्वयं आनाही ।"

किसानने कहा दिया लोनी थोड़ा थोड़ा करके, गल्लेका जम





( १२७ )

हूँ न हूँ सुख-तुल्य तो हूँ न तो हूँ न।  
 न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न।  
 न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न।  
 न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न।

( २ )

तो उदासी का सन्तान बलवान्।  
 तो उदासी का कृतार्थ-भाव बलवान्।  
 तो उदासी का सदा सदा ही बलवान्।  
 न तो उदासी का सन्तान ही बलवान्।  
 अतः आज न तो उदासी ही बलवान्।  
 न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न।

( ३ )

तो न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न।  
 तो न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न।  
 तो न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न।  
 तो न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न।  
 तो न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न।  
 तो न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न।

( ४ )

तो न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न।  
 तो न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न तो हूँ न।

परम्परायन्त्रसे उठो तथा बढ़ो सभी  
 अर्थात् अमर्त्य—अधुमे अगदु हो चढ़ो सभी ॥  
 रहो न यों कि एकसे न काम और का मरे ।  
 यही मनुष्य है कि जो मनुष्यके लिए मरे ॥

( ५ )

घड़ो अभीष्ट मार्गमें सहर्ष खेलते हुए ।  
 विपत्ति विना जो पड़े उन्हें डकेलते हुए ॥  
 घटे न हेल मैल हों, बढ़े न भिन्नता कभी ।  
 अन्तर्क एक पन्थके सन्तर्क पन्थ हों सभी ॥  
 सभी समर्प भाव है कि तारता हुआ तरे ।  
 यही मनुष्य है कि जो मनुष्यके लिए मरे ॥

मन्त्र

- ( १ ) इन वचनोंसे तुम्हें क्या उपदेश मिलता है ?  
 ( २ ) तीसरा छन्द कण्ठस्थ करो ।  
 ( ३ ) त्रिंशंक नाथका समाप्त विषय करो ।
-



बोलनेकी शक्ति । अनुकम्पीय=अनुकरण करनेके योग्य । भ्रमात्मक धारणा=  
घ्राणि युक्त विचार । पारलौकिक=पग्लोकमें अच्छा कल देनेवाला । स्वार्थ=  
सुदुर्गर्ज । वयार्थ=डीक, वायनवमें ।

## ५—प्यारा हिन्दुस्तान

समंगल=कल्याण युक्त । विरद=कोत्ति, बड़ाई । सरमिज=कमल ।

## ६—संसारकी सबसे बड़ी कहानी

नयनाभिराम=छन्द । सूरमा=शूर वीर । आसुरी=राक्षसी । कृत्य=  
कार्य । उपासक=उपासना करनेवाला, भक्त । आर्तनाद=दुःख भरा चोत्कार ।

## ७—नीतिके दोहे

गलीत=दुर्दशाग्रस्त । ध्रुति=वेद । सृति=स्मृति, धर्मशास्त्र । निमक=  
कमजोर । सरोज=कमल । जोष=देखना । कनक=मोना, चमू । अरक=  
अरबन, सूर्य । उदोत=प्रकाश । सनगई=कोधयुक्त ।

## ८—कल्पनाशक्ति

कल्पनाशक्ति=वात गड़नेका सामर्थ्य । प्राक्स्तन=बढ़नेका । आकल्पान्त=  
प्रलय तक । परागत=छुटी । दगोरा=झूठ । किशोरेगाइ=पिना । ओर छोर=  
अन्त । किरका=अन्नका टूटा हुआ दावा । देय=त्यागने लायक । निष्कर्ष=  
सारांश । परिणत=बढ़ना हुआ । कल्पना=विचार । जल्पना=बात करना ।

## ९—हिन्दी

अप्रबन=आगरा । छाल=छल्लूजीछाल । परिजन=मर्ब साधारण जनता ।  
प्रभृति=इत्यादि । रिक्का=गुणवाही, प्रमद होनेवाले । करि=कर्म । मम-  
सान=दमसान । अरविन्द=कमल ।





## १०—वेदांका उपदेश

मूल आध्यात्म=बुनियाद । प्रदिपादक=मिझ करने वाला । मन्त्र दण्ड=जिन कृपियोंके प्रति वेदांका मन्त्र प्रकाशित हुआ है, उन्हें मन्त्र दण्ड कहते हैं । धनुसगण कर्तों=अनुयायी बनो । क्षमता=योग्यता, शक्ति । अभिज्ञ=ज्ञातकार ।

## ११—वनशोभा

घात=छन्द । साल=मागीन । विसालन=पड़े पड़े । शिखर=पर्वत । शमन=भट्ट । विभ्रम=फेरा, भ्रमण । सातिवक=सत्तागुप्तदुष्ट ।

## १२—माननीय श्रीनिवास शास्त्री

व्यक्त करना=प्रकट करना । सोम=तीक्ष्ण । अज्ञान=अज्ञान । पयन्दगी । उपलक्ष्यमें=निमित्त, दृष्टिसे । स्वर्गसदृश=सर्गसदृश । किर्या=इनाम दिया ।

## १३—समयका फेर

चुग्गु=सूखा हुआ । पुल-पुल कर बाने करना=हिलाना । शॉटिपग=गुच्छेपर । शॉटि लेती=झूलती हुई । काल=काल । आयाज़ । भुजंग=सर्प ।



## १५—रहीमके दोहे

सरवर=सायाव । रीत=प्रकारमे । जीवो=जीना । दीवो=देता । अमर-  
 देलि=आकाश बैचरि । आखर=अक्षर । मुलिभावे=मुंहमें हुंमने । पुरतार्थ=  
 प्रयत्न । हय=घोड़ा । बडरी=बूढ़ी, पत्नी विशेष । पति=इमान ।

## १६—पनडुबरी जहाज

आविष्कार=इजाद । दौमले=इच्छाएँ । नेम्तवाचुर=मटिबामंद । जिओदो=  
 बागी । अभिजाया=इच्छा । सकलजा=कामयाबी ।

## १७—मन

मुद=आनन्द । तूत=हई । रंक=दरिद्र । बधुधा=दुखिनी । पगिपीड़न=  
 कष्ट ।

## १८—फा-हियानकी भारत-यात्रा

वृत्तान्त=समाचार, खबर । एइत्र=इकट्ठा । म्त्स=मत्स्य । मंवाराम=  
 बौद्ध आधम । अधुधारा=औंठओंकी धार । निर्विघ्न=गद्दी सन्धामन । कृत-  
 कृत्य=कृतार्थ ।

## १९—क्या से क्या

धाक=रोबदार । हुन=सोना ।

## २०—बेतारका चमत्कार

तोहफा=उपहार । पाश्चात्य=पश्चिमीय । महस्वपूर्ण=गौरवयुक्त, भारी ।  
 मनोविनोद=आमोद प्रमोद, मनको प्रमन्न करनेवाला । बाघ-बाघा ।  
 कार्यपद्धति=कामका ढंग । सूभम=बारीक । शब्द-ग्राही=आवाजको पकड़ने  
 वाला । प्रेषित=भेजा हुआ । कौतुहल जनक=उत्सुकता पैदा करने वाला,  
 आश्चर्यजनक ।



विभिन्न=तगढ़ तरह । बगौंके=रंगोंके । मेघ-मुक्त=बादल रहित । भय-  
निमग्न भाव न हो । विम्वय=भाभय । विधपनि=ईश्वर । काँवनाभा=  
सोनेकी सी कान्ति । पर्यटक=भ्रमगङ्गारी, यात्री । परांत=दूरा । मृगवा=  
सिंहार । शैव्य=ईडक । अमात्य=मन्त्री । श्री=गोमा । कृपमगृह=कृपका  
मेड़क । प्रगस्त=विनाश ।

## २५—सदुपदेश

परमाग्य=मुक्ति । सलिल=वृद्ध । समागम=पंचम । वात्रि=घोड़ा ।  
जयास=हिगुभा, एक प्रकारका जंगली कटिहार पौधा ।

## २६—भारतका दान

अनोत=धीला हुआ । निर्दिष्ट=निश्चित । चरंर=भयभय, जंजली ।  
सुनीभ्य=तोश्र । प्रतिभा=विचार-शक्ति । कृतिव्य=रचनाका भाव । प्रकु-  
टित=प्रकट । व्युत्पत्ति=योग्यता, ज्ञान । विदुष=मूर्खों की भूमध्य रेखाके  
सामने पहुँचनेका समय । भवगत=ज्ञानकार । आलोचना=किसी वस्तुके  
गुण-दोषपर विचार करना ।

## २७—बाल भावना

नवनीत=मक्खन । सुदुहन=सुइनेके बड़ । रेनु=धूल । मधुकाज=भौर ।  
कल्प=पुग । ररै=रटै । पेलन=देवत । अधवारि=भौधी । कनिषाँ=गोद ।  
दधिदनिषाँ=होड़ी, दही रखनेका पात्र । जुठनिषाँ=मुडन । रेनी=चोटी ।  
आंछति=कंधी कम्ती है । भ्यै=जमीनपर ।

## २८—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रथर=तीक्ष्ण, तेज । पैतृक=बापदावोंकी । सम्पन्न=धनी । त्रिन्दा-  
दिली=सजीवता । पद्म=कमल । नृप=भंड । दिवानामा=दानपत्र ।  
दगियादिन्=उदार । दमन=महाशय । गुनगानी=गुनघाटक । मेह=प्रेम ।

विज्ञेयगत । निनाती=निपनानुहृत आवरण करनेवाला ध्वनि, विनीत ।

## २९—कवीरके उपदेश

आता=दुर्गर्जनी । मीघ=मृत्तु । मीघी=मघा । रेत=रेम । दामाग्र्य=  
हमेशी भगा ।

## ३०—उद्योग-धन्ये

दुर्गर्जनी=दुर्गर्जनी । मीघ=मृत्तु । मीघी=मघा । रेत=रेम । दामाग्र्य=  
हमेशी भगा । उद्योग=धन्ये ।

## ३१—गिरिधरकी कुटिलिया

गिरि=गिरि । गिरिधर=गिरिधर । गिरिधर=गिरिधर । गिरिधर=गिरिधर ।

## ३२—काटियाबाड़

काटिया=काटिया । काटिया=काटिया । काटिया=काटिया । काटिया=काटिया ।

## ३३—देवताभोज पैनला

देवता=देवता । देवता=देवता । देवता=देवता । देवता=देवता ।

## ३४—गरी मनुष्य ई

गरी=गरी । गरी=गरी । गरी=गरी । गरी=गरी ।

विभिन्न=तगढ़ तगढ़ । वर्गोंके=रंगोंके । मेघ-मुक्त=बादल रहित । भक्षक=  
 जिनका नाश न हो । विस्मय=आश्चर्य । विधपनि=ईश्वर । कांवनामा=  
 सोनेकी सी कान्ति । पर्यटक=प्रमगकारी, यात्री । पयोस=पूग । हग्या=  
 शिकार । सैन्य=उंटक । अमान्य=मन्त्री । श्री=शोभा । कृपमगूक=हृषीक  
 मेढक । प्रशान्त=विशाल ।

## २५—सदुपदेश

परमारय=मुक्ति । सल्लिङ्ग=जड । समागम=संघर्ष । वात्रि=घोड़ा ।  
 जवाय=हिगुआ, एक प्रकारका जंगली कटेदार पौधा ।

## २६—भारतका दान

अनील=नीला हुआ । निर्निष्ट=निश्चिन् । वर्ग=प्रमद, जंगली ।  
 एनीशग=नीत्र । प्रतिभा=विचार-शक्ति । कृतिग्व=रचनाका भाव । प्रमृ-  
 टित=प्रकट । व्युत्पत्ति=व्याख्या, ज्ञान । विपुष=मूषके की एक भूमध्य रेखाके  
 सामने पहुँचनेका समय । अवगत=ज्ञानकार । आलोचना=किसी वस्तुके  
 गुण-दोषपर विचार करना ।

## २७—बाल भावना

नवनीत=मरम्भन । पुटुदन=पुटनेके बड । रेनु=धूल । मधुमान=भौर ।  
 कल्प=गुण । ररे=रट । पेलन=देखन । अंधवाग्नि=भीषी । कनिषी=गोद ।  
 दधिदनिषी=होड़ी, दही रखनेका पात्र । जुटनिषी=जुटन । बेनी=बोरी ।  
 ओछनि=कंजी कम्पी है । स्वे=जमीनपर ।

## २८—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रवर=नीशग, तेज । पैकूक=बापकादोंकी । मय्यन्त=धनी । जिन्दा-  
 जिन्दी=मज्जीदना । पय=कमल । नज्जर=भंड । दिशानामा=दानपत्र ।  
 इग्यादिन्=उडार । हज्जन्=महाशय । गुनगानी=गुनपाइक । नेह=प्रेम ।

दाने=पागल । निमाना=निपमानुष्ट आचरण करनेवाला व्यक्ति, विनोत ।

### २९—कवीरके उपदेश

आना=बुद्धिजी । नीच=मृत्यु । साँची=सचाई । हेत=प्रेम । परमारथ=दुनोकी भलाई ।

### ३०—उद्योग-धन्ये

हुतली घर=बपड़े पुननेके कारखाने । दुर्भिक्ष=अकाल । अपरोक्ष=मानने, सम्मुख । उदर-पूर्ति=पेट भरना ।

### ३१—गिरिधरकी कुण्डलिया

गड=स्थान । बेगरजी=बे मतलब । दावागीर=दावा करनेवाला । धुके दादी=मर्पादापालक ।

### ३२—काठियावाड़

इमारत=भवन । गोपुर=किरका फाटक । जीने=सीढ़ियाँ । वित्तकर्षक=मनमोहक । अन्तपत्र=अद्वैत ।

### ३३—देवताओंका फैसला

कृपादृष्टि=मेहरबानीकी नज़र । निर्णय=फैसला ।

### ३४—वही मनुष्य है

पशुप्रवृत्ति=पशुओंका काम । वृत्ती=गुँजती । अन्तरिक्ष=आकाश । परमगदलम्ब=आपसरी सहायता । अभीष्ट=इच्छित । अन्तर=दिना तरु । मन्त्र=सावधान ।

विभिन्न=तगह तरह । वर्णों के=रंगोंके । मेघ-मुक्त=बादल रहित । मधु-  
 त्रियका नाश न हो । विम्वय=आश्चर्य । विषयनि=ईश्वर । काननामा=  
 सोनेकी सी कान्ति । पर्यटक=भ्रमणकारी, यात्री । परांत=रूपा । सुगवा=  
 सिकार । शैत्य=टंडक । अमात्य=मन्त्री । श्री=शोभा । कूपमगृह=कुएँ का  
 मेढ़क । प्रसाम्त=विशाल ।

## २५—सदुपदेश

परमायथ=मुक्ति । सलिल=जल । समागम=पंथ । वात्रि=पोंडा ।  
 जवाम=हिगुभा, एक प्रकारका जंगली कोंटेदार बौदा ।

## २६—भारतका दान

अनीत=बीता हुआ । निर्दिष्ट=निश्चिन । वर्ण=अमन्त्र, जंगली ।  
 एनीत=नीत । प्रतिभा=विचार-शक्ति । कृतित्व=रचनाका भाव । प्रमु-  
 दित=प्रकट । व्युत्पत्ति=व्योप्यता, ज्ञान । विपुल=मूपके वीर मूमन्त्र रेनाके  
 सामने पहुँचनेका समय । अवगत=ज्ञानकार । आलोचना=किमी वस्तुके  
 गुण-दोषपर विचार करना ।

## २७—बाल भावना

नवनीत=मकलन । घुटहन=घुटनेके बल । रेनु=पूल । मधुसान=भौर ।  
 कल्प=पुग । र्व=रटे । पेन्त=देमल । अंधवारि=भौपी । कनिया=गोद ।  
 दधिदनिया=दही, दही रखनेका पात्र । जुदनिया=गृह । वंती=पोंडी ।  
 आंछति=कंधी कगती है । भ्वै=जमीनपर ।

## २८—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रवर=नीतग, लेत्र । वैदक=बापगदोंकी । सम्पन्न=धनी । त्रिन्दा-  
 दिलो=मन्त्रीवता । वय=कमल । भृतर=भेट । दिवानामा=दानग ।  
 दग्धिदिष्ट=उदार । दत्तग=महाशय । गुनगानी=गुनपाइक । नेद=प्रेम ।

ने=बागल । निमानी=निपनाहुल आपरण करनेवाला व्यक्ति, विनोत ।

### २९—कवीरके उपदेश

आपा=गुरुद्वारा । मीघ=मृत्यु । साँची=मचाई । हेत=प्रेम । परमारथ=  
संकी भलाई ।

### ३०—उद्योग-धन्ये

धुतली घर=कपड़े धुनेके कारखाने । दुर्निक्ष=अच्छाल । अपरोक्ष=  
जानने, सम्मुख । उदर-पूर्ति=पेट भरना ।

### ३१—गिरिधरकी कुण्डलिया

टाई=प्यान । घेगरजी=धे मतलब । दावागीर=दावा करनेवाला ।  
घुक्के बाटी=मचांदापालक ।

### ३२—काठियावाड़

इनारत=भवन । गोपुर=किलेका फाटक । जीने=मीड़ियाँ । वित्ताकर्षक=  
नग्नोहक । अन्त्यज=अष्टन ।

### ३३—देवताओंका फैसला

कृपादृष्टि=मेहरबानीकी नज़र । निर्जद=कैसला ।

### ३४—वही मनुष्य है

पशुपशुक्ति=पशुओंका काम । कृजती=कृजती । अन्तर्निष्ठ=आकान ।  
परमगदलम्ब=आपसकी सहायता । अनीष्ट=इच्छित । अदर्स=दिना तर्क ।  
मनकं=साक्ष्यान ।



विभिन्न=तरह तरह । बगों के=रंगोंके । मेघ-मुक्त=बादल रहित । अक्षय=  
 त्रियका मात्र न हो । विस्मय=आश्चर्य । विश्वपति=ईश्वर । काँवनाया=  
 सोनेकी सी कान्ति । पर्यटक=भ्रमणकारी, यात्री । पशंसि=तूना । सुगन्ध=  
 शिंकार । शैत्य=ठंडक । अमात्य=मन्त्री । धी=शोभा । कृपमग्दुक=कुपेका  
 मेदक । प्रशस्त=विशाल ।

## २५—सदुपदेश

परमायुध=मुक्ति । मलिन=त्रुट । समागम=संयोग । वाति=घोड़ा ।  
 जवाम=हिगुआ, एक प्रकारका जंगली कौटेंदार पौधा ।

## २६—भारतका दान

अनीत=चीता हुआ । निर्दिष्ट=निश्चित । सर्वर=असम्भव, जंगली ।  
 सनीश्वर=सीध । प्रतिभा=विचार-शक्ति । कृत्स्न=रचनाका भाग । प्रसु-  
 टित=प्रकट । व्युत्पत्ति=व्योपना, ज्ञान । विपुल=सूर्यके सिक भूमध्य रेखाके  
 सामने पहुँचनेका समय । अवगल=ज्ञानकार । आलोचना=किसी वस्तुके  
 गुण-दोषपर विचार करना ।

## २७—बाल भावना

नवनीत=मकलन । घुटुहन=घुटनेके बल । रेनु=धूल । मधुपान=भीरे ।  
 कल्प=युग । रौं=रटे । पेलत=देखन । अंधवारि=भीषी । कनिषां=गोद ।  
 दधिदनिषां=होड़ी, दही रखनेका पात्र । गुठनिषां=गुठन । पेनी=चोटी ।  
 ओष्ठति=कंठी लगती है । भवै=जमीनपर ।

## २८—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रथर=नीलग, तेज । पैतृक=बापदादाकी । सम्पन्न=धनी । त्रिन्दा-  
 दिनी=मन्त्रीवना । पय=कमल । नज्जर=भंड । दिवानामा=दानस्य ।  
 दग्धिदिन=उद्धार । दग्धन=महाभाग । गुनगानी=गुनपाइक । नेइ=प्रेम ।

दिने=प्रातः । निमात्री=निपन्नादुक्त भयानक करनेवाला व्यक्ति । विनोत ।

### २९—कवीरके उपदेश

आनन्ददुर्गावी । नीच=दुष्ट । साँची=सवाई । हेत=प्रेम । परमारथ=  
इन्हीं भलाई ।

### ३०—उगोग-धन्ये

हुली घर=वस्त्र हुनेके कारणसे । दुर्मिष्ट=अकाल । अपरोक्ष=  
अनन्त । उदग्भूति=पेट भाना ।

### ३१—गिरिधरकी कुण्डलिया

छाई=आसन । फंगली=पं मन्त्र । दावागीर=दावा करनेवाला ।  
धुके बाडी=मयांसकालक ।

### ३२—काठियावाड़

इन्द्रात=भय । गोपुर=किरका फाटक । जीने=सीढ़ियाँ । विचार्यक=  
कतनाहक । अन्त्यज=अष्ट ।

### ३३—देवताओंका फैसला

कृष्णहिन्द=हरमानीकी नङ्ग । निर्मय=कैसला ।

### ३४—वही मनुष्य है

पुनरुत्पिन्=पुनःका काम । वृजती=गुं जती । अन्तर्हि=आकर ।  
पत्न्यवत्त=आपनकी सहायता । अनीह=इच्छित । अन्तर्=विना तर्क ।  
मन्त्र=मावधान ।

विभिन्न=वर्ग ताड । वर्गोक्ति=वर्गोक्ति । मेघ-मुक्त=बादल रहित । मध्यम-  
विमला नाम न हो । विमल=भास्वर । विषयनि=विषय । काव्यतामा=  
मानेहो सी कानि । पर्यटक=प्रसन्नकारी, वात्री । पर्यस्त=रुग्ण । सुगन्ध-  
निकार । शीघ्र=वृद्ध । अमास=मन्त्री । भी=गोमा । रूपमगृह=गुर्गुहा  
मेदक । प्रसन्न=विशाल ।

## २५—सदुपदेश

परमागन्ध=मुक्ति । सविष्ट=जड । समागम=वर्णन । वाति=प्राण ।  
जवाग्न=हिमालय, एक प्रहाराका जगदी कीटेश्वर पौष ।

## २६—भारतका दान

अनील=नीला दृभा । निर्दिष्ट=निश्चित । वर्णन=प्रसन्न, जगदी ।  
सुनील=नीला । प्रतिभा=विचार-शक्ति । कृत्स्न=सम्पत्ताका भाव । प्रस-  
न्न=प्रसन्न । व्युत्पत्ति=व्युत्पत्ति, ज्ञान । विषय=गुणोंके शीघ्र मूल्य । जग-  
मासने वर्ज्य=वर्ज्य । अवगम=ज्ञानकार । भास्वता=किमी कल्पने  
गुण-जगत्तर विचार करना ।

## २७—वायु भावना

मयनील=मयनील । पृष्ठ=पृष्ठके कण । रेनु=पुन । मयुक्त=भी ।  
कल्प=पुन । रं=रं । पल्प=पल्प । अंशवाति=भीरी । कतिपय=भीरी ।  
इतिरिक्त=भीरी, इति रं=भीरी । पृष्ठ=पृष्ठ । रेनु=पुन । रेनु=पुन ।  
भोग्य=भोग्य । कतिपय=भीरी । रं=रं ।

## २८—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रसन्न=प्रसन्न, मेघ । रेनु=पुन । मयुक्त=भीरी । मयुक्त=भीरी ।  
कतिपय=भीरी । पल्प=पल्प । मयुक्त=भीरी । मयुक्त=भीरी ।  
इतिरिक्त=भीरी । मयुक्त=भीरी । मयुक्त=भीरी । मयुक्त=भीरी ।

संकेतगत । निमानी=निपनादुक्त आशय करनेवाला व्यक्ति, विनोत ।

## २९—कवीरके उपदेश

आनन्दपुद्गल । मोक्ष=मुक्त्यु । सावी=सवाई । हेतु=प्रसंग । समागम=  
मोक्षी मलाई ।

## ३०—उद्योग-धन्ये

उत्तरी धन्यपदें सुननेके कारणसे । दुर्भिक्ष=अकाल । अपरोक्ष=  
जने, मनुष्य । उद्गर्ध=उत्प्रेत भगता ।

## ३१—गिरिधरकी कुटुम्बिया

उदं=उपान । देवाजी=प्रे मतलब । दावागीर=दावा करनेवाला ।  
के हाटी=मयांदावालक ।

## ३२—काठियावाड़

इलाक़ा=मदन । गोपुर=किरका फाटक । जीने=जींदियां । चित्ताकर्षक=  
मनोहक । अन्तर्धन्य=महान् ।

## ३३—देवताओंका फैसला

बृहद्योनि=महामानीकी नज़र । निर्दय=कर्मल ।

## ३४—वही मनुष्य है

सुन्दरि=सुन्दरीका काम । वृद्धी=गुंजती । अन्तरिक्ष=आकाश ।  
समागम=आत्मकी समापता । अभीष्ट=इच्छित । अन्तर्=दिता तहें ।  
मार्ग=आवसान ।